Regd no. VSI(W)55/2014-2015

ओ३म्

ऋषिमना यः ऋषिकृत् स्वर्षाः (साम. 1179)

हम ऋषिमना होकर प्रभु की प्रभा को प्राप्त करें।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का मुखपत्र

महर्षि पाणिनि-प्रभा

सुबह-ए-बनारस

सुबह-ए-बनारस कार्यक्रम में अस्सी घाट पर यज्ञ कराती
आचार्या जी व यजमान के रूप में उपस्थित
वाराणसी के डी.एम. श्री प्रांजल यादव

14, 15 नवम्बर 2014, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैण्ट,
एरिया, गया में 151 कुण्डीय यज्ञ की ब्रह्मा
आचार्या प्रीति विमर्शिनी व ब्रह्मचारिणियाँ

11-15 अप्रैल 2015, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल डेहरी-
ऑन-सोन में आयोजित चरित्र निर्माण शिविर के उद्घाटन में
दीप प्रज्ज्वलित करती आचार्या जी व विशिष्ट अतिथिजन

27 फरवरी व 1-2 मार्च 2015, दिल्ली संस्कृत अकादमी
द्वारा आयोजित अखिल भारतीय विदुषी सम्मेलन में विशिष्ट
बहनों के साथ व अध्यक्षीय सम्बोधन करतीं आचार्या जी

अन्ताराष्ट्रीय छात्रावास में अध्ययनरत बड़ी कन्याएँ
व साथ में आचार्या नन्दिता शास्त्री

1 अप्रैल 2015, केदारघाट, वाराणसी में आयोजित
108 सितार वादन कार्यक्रम में भाग लेती
पाणिनि कन्याएँ

ओ३म्

महीयसी संस्थापिका
डॉ० प्रज्ञा देवी जी

पूज्य गुरुवर्य
श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

महीयसी संस्थापिका
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

महर्षि पाणिनि-प्रभा

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११६ | संयुक्तांक जनवरी–जून, २०१५ | वर्ष ९, अंक-१ | पौष–ज्येष्ठ, वि.सं.२०७२

सम्पादिका
आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी
मो०- 9235539740

◆

सहसंपादिका
डा० प्रीति विमर्शिनी
मो0- 9235604340

◆

प्रकाशक
पाणिनि कन्या महाविद्यालय
पो०- महमूरगंज, तुलसीपुर,
वाराणसी– 221010 (उ0प्र0)
फोन : (0542) 2363340

◆

Regd no. VSI(W)55/2014-2015
पत्रिका संबंधी सम्पर्क नं.
07376471063
पत्रिका सदस्य
वार्षिक : 150/-
आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

प्रभा–रश्मयः

1. **वेद-वाणी– यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः** – आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी 2–4
2. **सम्पादकीयम् – चरित्र निर्माण........ –** – डॉ. प्रीति विमर्शिनी 5–8
3. **महर्षि पाणिनि की भारत को देन–** – हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 9–11
4. **मुस्लिम लड़कियाँ पढ़ रही हैं वेद–** –12
5. **अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास–** –13
6. **डाक टिकटों में आर्य समाज–** – सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी 14–15
7. **सुगम रोगों की चिकित्सा–** – अजीत मेहता 16–18
8. **मां शत शत वन्दन शत शत प्रणाम–** – डॉ. रोचना भारती 19–22
9. **वैदिक संस्कार...... शिविर–** –23
10. **विश्व को आर्यों की देन–** – स्वामी शिवानन्द सरस्वती 24–27
11. **स्वतन्त्रता संग्राम में–** – आशा रानी व्होरा 28-30
12. **ज्योतिष और धर्मशास्त्र –** – आचार्य हरिहर पाण्डेय 31-34
13. **टाइम्स ऑफ इण्डिया–** – संजय गुप्ता –35
14. **सृष्टि-प्रलय-संवत् सरादिकाल गणना–** – महात्मा ओम्मुनि 36-40

◆

Webside- www.paninikanyagurukul.com, E-mail- paninikm@gmail.com

वेद-वाणी

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः–

परमेश्वर की दिव्य विभूतियाँ हमारी रक्षा करें–

ओं अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

(ऋ.. 7/41/7)

यह मन्त्र ऋग्वेद का है। इसका देवता अर्थात् प्रतिपाद्य विषय उषा है। इससे पूर्व **प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रम् हवामहे** इत्यादि प्रातःकालीन 5 प्रार्थना मन्त्र हैं जिनका प्रातःकाल पाठ करना गुरुकुलीय बच्चों की दिनचर्या में अनिवार्य है। उसी क्रम में दो मन्त्र उषा देवता के हैं। यजुर्वेद के 34वें अध्याय में भी इनका इसी प्रकार इसी क्रम से उल्लेख है। यजुर्वेद मुख्य रूप से कर्म का ज्ञान देने वाला वेद है जिसमें प्रातःकालीन प्रार्थना सन्ध्या हवन से लेकर रात्रिकालीन प्रार्थना ही नहीं जीवन का अन्तिम कर्म अन्त्येष्टि संस्कार तक के मन्त्र हैं और यही नहीं जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम के साथ मोक्ष तक के प्रतिपादक मन्त्र हैं यजुर्वेद का अन्तिम 40वाँ अध्याय जो कि ईशोपनिषद् के नाम से भी जाना जाता है उसमें जीवन का सम्पूर्ण प्राप्तव्य, रहस्य मात्र 16 मन्त्रों में बता दिया है इस दृष्टि से यह अध्याय विशेष रूप से ध्यातव्य है। अस्तु।

प्रस्तुत मन्त्र में उषा के लिये बहुवचन में उषासः शब्द का प्रयोग किया है और उसी के अनुसार उसके सभी विशेषण बहुवचन में ही हैं। वस्तुतः प्रकरण के अनुसार उषा का अर्थ यहाँ प्रभात वेला है। जिसका हर क्षण हर पल महत्वपूर्ण है ग्राह्य है उपयोगी है स्वागत के योग्य है और जो स्वागत के योग्य है उसका सम्मान पूर्वक कथन एकवचन में न होकर बहुवचन में होता है यही हमारी संस्कृति है इससे हम सब अभिज्ञ हैं इसलिये व्यवहार में भी हम ऐसा ही करते हैं।

प्रकृत मन्त्र में उषा के छः विशेषण इस प्रकार हैं– 1. अश्वावतीः, 2. गोमतीः, 3. वीरवतीः, 4. भद्राः, 5. घृतं दुहानाः, 6. विश्वतः प्रपीताः। जिनका पृथक्-पृथक् विवेचन अपेक्षित है।

प्रथम– अश्वावतीः अश्ववत्यः। अर्थात् जो व्यापनशील है व्याप्ति के गुण से युक्त है जो स्वयं सम्पूर्ण भूमण्डल में वातावरण में व्याप्त होती है और अन्यों को भी व्याप्त करती है उसका नाम उस वेला का नाम उषासः है यह वेला मनुष्य को क्रियाशील और पूर्ण बनाती है। इस वेला की विशेषता है इस समय जो भी जिस किसी भी कठिन से कठिन लक्ष्य की प्राप्ति के लिये भी प्रयत्नशील होगा वह सिद्ध होगा उसकी साधना पूर्णता को प्राप्त होगी। उदाहरणार्थ– विद्यार्थियों का ध्येय विद्याभ्यास है योगियों का योगाभ्यास– ईश्वर प्राप्ति, स्वर साधकों कलाकारों

मल्लाभ्यासियों सबका अलग ध्येय है पर जो जिस ध्येय से उसका भजन सेवन करता है वह उसी रूप में उसे पूर्ण कर देती है।

दूसरा– गोमतीः गोमत्यः। जो गमनशील हैं गतिशील हैं दूसरों को भी गतिमान् ज्ञानवान् बना देती हैं। यह काल दोहन करने का है वेदों में ब्रह्मगवी का वर्णन है ब्रह्म अर्थात् परब्रह्म परमेश्वर उसकी गौ वेदवाणी वेदमाता, प्रकृति पञ्चमहाभूत पृथ्वी जल तेज वायु आकाश आदि सबका दोहन सेवन शिशु की भाँति जिस वेला में किया जाता है उसका नाम उषा गोमती है।

तीसरा– वीरवतीः वीरवत्यः। यह वेला हमें वीर साहसी पराक्रमी व्रती बनाने वाली है। विशेष रूप से प्रेरणा करने वाली (वि + ईर गतौ कम्पने च) हमारे तन मन को आन्दोलित प्रकम्पित करने वाली है। जिनके माता-पिता उषःकाल का सेवन करते हैं उनकी सन्तान स्वस्थ नीरोग दृढ संकल्प वाली पराक्रमी होती है।

चौथा– भद्राः भन्दनीयाः भजनीयाः। जो भद्र है भन्दनीय है भजनीय है कल्याणकारी सुखकारी है (भदि कल्याणे सुखे च)। **यद् भद्रं तन्न आसुव** जैसी प्रार्थना के योग्य है। जो भी इस वेला का सदुपयोग करेगा वह भद्र बनेगा वह अपना ही नहीं दूसरों का भी कल्याण करेगा दोषों से दूर होगा यह सुनिश्चित है।

पाँचवा– घृतं दुहानाः घृतमित्युदकनाम। वैदिक शब्द कोष में घृत का अर्थ जल है। **तेजो वै घृतम्, आयुर्वै घृतम्** ब्राह्मण ग्रन्थों में तेज को वीर्य को आयु को भी घृत कहा है। यह उषःकाल रात्रि के अन्तिम प्रहर में जल के रूप में ओसकण के द्वारा सबको सिञ्चित करता है। इस काल में किया गया प्राणायाम व्यायाम आदि अभ्यास मनुष्य को तेजस्वी वर्चस्वी हरस्वी बनाता है। इसलिये उषःकाल को घृत का दोहन करने कराने वाली कहा गया है।

छठा– विश्वतः प्रपीताः। सब ओर से बढ़ी हुई सबको बढ़ाने वाली है। इस काल में किया गया चिन्तन अभ्यास मनुष्य के शारीरिक मानसिक बौद्धिक आर्थिक सामाजिक पारिवारिक राजनैतिक हर प्रकार के लौकिक पारलौकिक विकास का कारण बनता है। यहाँ उव्वट महीधर अपने यजुर्वेद भाष्य में लिखते है– **सर्वतः आप्यायिताः धर्मार्थकामैः**। अर्थात् जो सब ओर से मनुष्य को धर्म अर्थ काम से बढ़ाने वाली हैं। मनुष्य की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं।

ऐसी उषासः धरती के अन्धकार को **सदम्** सर्वदा निरन्तर प्रतिदिन **उच्छन्तु** दूर करती रहें साथ ही हमारे अज्ञानान्धकार अज्ञानलक्षण जन्म-मृत्यु के पाश से भी हमें मुक्त करें और यही नहीं इससे पूर्व **प्रातरग्निं** आदि मन्त्रों में उच्चरित आहूत अग्नि, मित्र, वरुण, इन्द आदि देव भी अपने **स्वस्तिभिः** अविनाशी गुण धर्मों से सदा हमारी रक्षा करें– **यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः** यह प्रार्थना मन्त्र में की गई है।

वेदार्थ की कसौटी का निर्धारण करने वाले वेदांग निरुक्त में महर्षि यास्क ने वेद मन्त्रों में देवताओं का क्या

स्थान है उनका क्या स्वरूप है वे शरीरी हैं या अशरीरी आदि सिद्धान्तों का विवेचन किया है वहाँ वे लिखते हैं–

तेषां मनुष्यवद्देवताभिधानम्।

अर्थात् उनका मनुष्य के समान देवताभिधान कथन होता है इसलिये मन्त्रगत अग्नि वायु इन्द्र वरुण अदिति उषा आदि पदों से जहाँ अशरीरी देवता भौतिक जड़ पदार्थों का ग्रहण होता है वहीं इन गुणों से युक्त शरीरधारी जो पुरुष या स्त्री यह अर्थ भी लिया जाता है, लिया जा सकता है। यास्क के इसी सिद्धान्त को गाँठ बाँध कर महर्षि देव दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में सर्वत्र उपमालंकार या वाचक-लुप्तोपमालंकार के द्वारा वेदमन्त्रों का सहज सुन्दर व्यावहारिक अर्थ करने की एक विस्तृत व्यापक नई दृष्टि समाज को प्रदान की है। जिससे कल तक जो वेद मन्त्र केवल यज्ञ और कर्मकाण्ड तक सीमित माने जाते थे वे आज सामाजिक राजनीतिक पारिवारिक घर आँगन की मर्यादा के ज्ञापक मानक सिद्ध होने लगे।

इसी दृष्टि को अपनाकर महर्षि दयानन्द ने इस मन्त्र का जो भाष्य किया है वह नारियों के लिये उदाहरणीय है। प्रथम तो महर्षि इस मन्त्र के भाष्य में विषय का निर्देश करते हुए लिखते हैं कि– **पुनर्विदुष्यः स्त्रियः किं कुर्युरित्याह** कि फिर विदुषी स्त्रियाँ क्या करें यह इस मन्त्र का विषय है। पुनः वे भावार्थ में निर्देश करते हुए लिखते हैं।

''इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालंकार है। **जैसे उषा अर्थात् प्रभात वेला सब निद्रा में स्थित मरे जैसे मृतक कल्प लोगों को चेतना से युक्त कर कर्मों में प्रवृत्त कराती है वैसे ही होती हुई विदुषी स्त्रियाँ सब अविद्या रूपी निद्रा में स्थित लोगों को अध्यापन और उपदेश के द्वारा चेतनावान् बनाती हुई सत्कर्मों में प्रेरित करें।**''

वह युग जब नारियों के लिये वेद पढ़ने की बात तो दूर सामान्य पठन-पाठन अक्षर ज्ञान भी निषिद्ध था ऐसे समय में वेद मन्त्रों का ऐसा अर्थ करना स्वयं में एक क्रान्तिकारी कदम है। जिसमें स्त्रियाँ पढ़ें यही नहीं वे पढ़ायें, समाज को जागृत करें उन्हें सत्कर्मों में प्रेरित करें स्त्रियों से यह अपेक्षा की बात करना बहुत बड़े परिवर्त्तन की दृष्टि है। अस्तु।

मन्त्र के ये सभी विशेषण पूर्णतः नारी पर घटित होते हैं। इन मन्त्रों से महिलाओं को समाज के प्रति मेरा क्या दायित्व है यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये वस्तुतः वेद की नारी तो ऐसी ही है। यदि नारियाँ सम्मान चाहती हैं परिवार में समाज में अपनी प्रतिष्ठा चाहती हैं तो अपने इस रूप को दायित्व को उन्हें पहिचानना और अपनाना होगा।

हम सबका कर्त्तव्य है कि हम उषःकाल की इन विशेषताओं को जान कर उसका भरपूर लाभ उठायें। वस्तुतः यह वेला प्रकृति का अनमोल वरदान है जिसमें वह सौगात बाँटती नहीं लुटाती है और यदि हम उस समय पड़े सोते अलसाते रहते हैं तो हमसे बढ़कर अभागा दूसरा नहीं है यद्यपि कोई भी पुरुषार्थ पुरुषार्थ होता है पर इस समय किया गया पुरुषार्थ केवल पुरुषार्थ न होकर साक्षात् सौभाग्य होता है। ◆

– आचार्या नन्दिता शास्त्री

सम्पादकीयम्

चरित्र निर्माण शिविर–

वार्षिक परीक्षायें समाप्त हो गई हैं, ग्रीष्मावकाश का समय आ गया है। साथ ही विभिन्न संस्थाओं एवं विद्यालयों द्वारा वैदिक चेतना शिविर, चरित्र निर्माण शिविर, योग प्रशिक्षण शिविर, संस्कृत सम्भाषण शिविर आदि आयोजित होने लगे हैं जिनमें सन्ध्या अग्निहोत्र करना, योगासन, ध्यान, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण, संस्कृत सम्भाषणादि का अभ्यास कराया जाता है साथ ही आध्यात्मिक नैतिक, चारित्रिक, धार्मिक, वैदिक भारतीय वैदिक संस्कृति संस्कार आदि का प्रशिक्षण भी देते हैं पञ्च सप्त दिवसीय इन शिविरों में माता-पिता सगे-सम्बन्धियों से दूर अहर्निश आचार्य या अध्यापकों के संरक्षण एवं निरीक्षण में रहना होता है। प्रातः 4:30 बजे जागरण से लेकर रात्रि 10 बजे शयन तक की पूर्ण सुव्यवस्थित अनुशासन युक्त दिनचर्या का पालन करते हुए वैदिक विद्वान् एवं विदुषियों द्वारा विविध प्रकार की शिक्षाओं को प्राप्त करते हुए ज्ञानार्जन का आनन्द लेते हुए व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में ढलना होता है। ये शिविर वर्त्तमान समय में गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा प्रणाली की अनिवार्यता को भी सिद्ध करते हैं।

अभी विगत 11 अप्रैल 2015 से 15 अप्रैल 2015 तक (डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल डालमिया नगर डेहरी ऑनसोन रोहतास बिहार) में आयोजित पञ्च दिवसीय चरित्र निर्माण शिविर में यज्ञ की ब्रह्मा एवं मुख्य वक्ता के रूप में मैं (डॉ. प्रीति विमर्शिनी) तथा आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी आमन्त्रित थे। बहुत अच्छा अनुभव रहा। बिहार प्रक्षेत्र II के अन्तर्गत आने वाले 42 डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों के उत्साह से सराबोर कुछ अद्भुत नया सीखने को तत्पर 1200 छात्रों के साथ सभी विद्यालयों के निदेशक प्राचार्य, धर्माचार्य, क्रीडाशिक्षक, संस्कृत शिक्षक आदि उपस्थित थे। सभी कार्यक्रम सुव्यवस्थित, आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था गमनागमन की सुविधा, यज्ञ के साथ-साथ प्रतिदिन तीन सत्रों में चलने वाले परिचर्चा सत्रों का कुशल गरिमापूर्ण सञ्चालन अध्यापकों एवं छात्रों के ज्ञानवर्धन हेतु परिचर्चा सत्रों के लिये उचित वैदिक विषयों का चयन छात्रों के कौशल प्रशिक्षण एवं उत्साहवर्धन हेतु विविध प्रतियोगिताओं तद्यथा- मन्त्रोच्चारण, यज्ञनैपुण्य, यज्ञशाला सज्जा, झाँकी दैनन्दिनी लेखन, वैदिक प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन सब कुछ बहुत उत्तम था। इन सबके पीछे प्रतिभासित हो रहा था जिस सशक्त कर्त्तव्यनिष्ठ अनुभवपूर्ण व्यक्तित्व का कुशल निर्देशन वो थे गम्भीर सौम्य व्यक्तित्व के धनी सभी के प्रेरणास्रोत बिहार प्रक्षेत्र II के निदेशक **डॉ. यू.एस. प्रसाद** जी। और साथ में विद्यालय के प्राचार्य **श्री सामता प्रसाद** जी आपका सिद्धान्त कि यदि **विनम्रता से सभी कार्य सिद्ध हो सकते**

हैं तो उग्रता की क्या आवश्यकता बहुत ही अनुकूल एवं व्यावहारिक है। सब कुछ देखकर बिल्कुल गुरुकुल का लघुतम रूप प्रतीत हो रहा था प्रातः 4:30 बजे से रात्रि 10 बजे तक का समय कैसे व्यतीत हो जाता था ज्ञात ही नहीं हुआ जो कन्यायें साथ गईं थी उनका भी यही अनुभव रहा। अस्तु।

11 तां. की प्रातः यज्ञ के अनन्तर चरित्र निर्माण शिविर के उद्घाटन सत्र का आरम्भ हुआ और हाथों में प्राप्त हुई एक-एक फाइल जिसमें अन्य सामग्रियों के साथ प्राप्त हुआ एक अभिनन्दन पत्र जिसमें ये पंक्तियां लिखित थीं– **संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों से दूर होती जा रही भारतीय शिक्षा पद्धति को संस्कारों व मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक मूल्यों एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान से जोड़े रखने का अत्यन्त पावन प्रयास ही इन शिविरों का उद्देश्य है। युवा पीढ़ी को सभ्यता और संस्कृति का महत्त्व, परिष्कृत विचारधारा, स्वस्थ चिन्तन प्रक्रिया, जीवन के आदर्शों से अवगत कराना, कला एवं संस्कृति से जुड़ी विभिन्नताओं द्वारा उनमें छिपी प्रतिभाओं को उजागर करना एवं उत्तम चरित्र का निर्माण करना।** प्रायः यही उद्देश्यपूर्ण भाव सभी शिविरों के होते हैं। ये पङ्क्तियाँ वर्त्तमान समय में आयोजित चरित्र निर्माण शिविर की उपादेयता द्योतित कर रहीं थीं। इन पङ्क्तियों को पढ़कर विचार आया कि आज क्या विडम्बना है कितने दुःख की बात है कि जिस देश से कभी सम्पूर्ण विश्व के लोग चरित्र की शिक्षा लेने आते थे, मानवीय आदर्शों वैदिक सांस्कृतिक मूल्यों को सीखने आते थे जिस देश की संस्कृति सहस्त्रों वर्षों के बाद भी उतनी ही सशक्त उतनी ही मधुर और उतनी ही ज्योतिर्मयी है। जिसका ज्ञान आज भी विश्व के न जाने कितने मानव रत्नों के लिये प्रकाश का स्त्रोत है। जिसका एक युग ऐसा भी था जब यह सत्य, सौन्दर्य और शान्ति का प्रतीक था उस देश में हमें चरित्र निर्माण शिविर आयोजित करने पड़ रहे हैं। जिस देश के वासियों में सरल स्नेह औदार्य और बन्धुत्व की भावना जन्मजात होती थी, ऐसी दिव्य विरासत ऐसी गौरवपूर्ण परम्परायें जिस देश की रही हों उसी देश के वासियों में आज ऐसा परिवर्तन कि भारतीयता के नाम पर आज हम अपनी झोली इतनी खाली पाते हैं कि स्वयं को भारत राष्ट्र के वासी होने में सम्मान का अनुभव भी नहीं करते हैं।

देश की सबसे बड़ी पूँजी उसकी युवा शक्ति है, युवक जैसा भविष्य अपने लिये निर्माण करेंगे या युवाओं का जैसा भविष्य निर्माण कराया जायेगा। राष्ट्र का भविष्य भी उसी प्रकार होगा। आज का युवा वर्ग अपने अस्तित्व को भूल चुका है अपने कर्तव्यों को भूल पथ भ्रष्ट हो रहा है।

निश्चित ही किसी राष्ट्र के नागरिकों में यदि मानवता के गुण ही समाप्त होने लगें तो अन्य क्षेत्रों में हुई विविध उन्नतियाँ अन्ततः सारहीन हो जायेंगी। यह भी विचारणीय है कि विविध क्षेत्रों में अभूत पूर्व उन्नति-करने के बावजूद हमारा चारित्रिक नैतिक पतन क्यों? कारण स्पष्ट है भारत की वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली जब से हमने

प्राचीन वैदिक काल से चली आ रही गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा प्रणाली को समाप्त किया, तिरस्कृत किया मानव का चारित्रिक नैतिक पतन होना प्रारम्भ हुआ अध्यात्म विद्या जो कि मानव के अन्दर विवेक उत्पन्न करती है कर्तव्य अकर्तव्य का धर्माधर्म का बोध कराती है उसे हमारी शिक्षा प्रणाली से सर्वथा तिरोहित कर दिया गया परिणाम सामने है। आज भौतिकवादी बुद्धिजीवी वर्ग वर्त्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लगाते है। मैं उनसे पूछना चाहती हूँ कि क्या ये शिविर गुरुकुल के ही लघुतम रूप नहीं है? क्या उपरिलिखित उद्देश्य ही गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा प्रणाली के प्राण नहीं है? जो सदाचार का मूल है। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति में विद्या, आचार्य, गुरु, अन्तेवासी, छात्र, शिष्य, गुरुकुल ये शब्द प्रयुक्त होते हैं। जो अपने आप में ही महत्त्वपूर्ण हैं किसी विशिष्ट अर्थ को द्योतित करते है। उस गुरुकुलीय शिक्षा का प्रारम्भ दीक्षा के साथ होता हे दीक्षा व्रत से सम्बन्ध रखती है व्रत तप से तप ब्रह्मचर्य से ब्रह्मचर्य सत्य से सम्बन्ध रखता है। आचार्य उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार के द्वारा सभी देवों के साक्षित्व में सत्य बोलने का व्रत दिलवाता है। '**इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि**' मैं अनृत से असत्य से जो कि सब पापों का मूल है उसका परित्याग कर सत्य का व्रत लेता हूँ। इस ब्रह्मचर्य व्रत का सत्यता से, पूर्णनिष्ठा से पालन करते हुए 4-5 दिन नहीं अपितु कम से कम 12-14 वर्ष आचार्य के अन्तेवासित्व में रहकर विद्योपार्जन करना होता है। जहाँ प्रतिदिन ब्रह्मयज्ञ के द्वारा हृदयरूपी यज्ञ कुण्ड में आध्यात्मिक अग्नि का आधान करके अपने अन्दर विद्यमान काम क्रोध लोभ मोह अहङ्कार आदि शत्रुओं को नष्ट कर आत्मा को पवित्र करते हैं, वहीं देवयज्ञ द्वारा तथा शारीरिक दोषों की निवृत्ति एवं पर्यावरण की शुद्धि करते हैं।

परन्तु दुर्भाग्य है आज की शिक्षा में संस्कारों का कोई स्थान नहीं, यज्ञ का कोई स्थान नहीं, सत्य का, व्रत का, दीक्षा का ब्रह्मचर्य का तप का धर्म का, कोई स्थान ही नहीं तो मानव सुसंस्कारित कैसे होगा? सदाचारी चरित्रवान् कैसे बनेगा। आचार्य टीचर हो गये तो आचरण की शिक्षा कौन देगा? शिष्य स्टूडेण्ट हो गये तो वे शासन के योग्य विनम्र आज्ञाकारी कहाँ से होंगे? जिस शिक्षा में आध्यात्मिकता नहीं नैतिकता नहीं धार्मिकता नहीं मानवता नहीं वह शिक्षा नहीं कुशिक्षा है जिसमें मानवीय मूल्यों का आदर्शों का कोई अस्तित्व नहीं जिसमें राष्ट्रीय स्वाभिमान की चर्चा नहीं जो हमें मानसिक रूप से गुलाम बनाती है, वैदिक संस्कृति की ओर नहीं अपितु पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित करती है आध्यात्मिकवाद नहीं अपितु भौतिकवाद का विलासिता का संदेश देती है ऐसी शिक्षा एवं शिक्षा पद्धति किसी काम की नहीं। अतः आज आवश्यकता है शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को समझने की अपनी भारतीय संस्कृति जो कि **प्रथमा विश्ववारा** संस्कृति है उस पर गर्व करने की उसे अपनाने की तथा पाश्चात्य संस्कृति, पाश्चात्य शिक्षा पद्धति जो कि सभी समस्याओं की मूल है उससे राष्ट्र के भावी कर्णधारों को सुरक्षित करने की। यद्यपि यह सत्य है कि मानवीय

मूल्यों का ह्रास करने वाली तथा संस्कारों का विनाश करने वाली देश में प्रचलित इस शिक्षा पद्धति से राष्ट्र का प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति चिन्तित है, सशंकित है, परेशान हैं, किंकर्त्तव्यऽविमूढ है। पुनरपि सभी अपने-अपने स्तर से इसका समाधान ढूँढ रहे हैं, प्रयास भी हो रहा है, ये विभिन्न प्रकार के शिविरों के आयोजन भी उसी समाधान के ही अंग हैं देश की इस तिमिराच्छन्न स्थिति में ये डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आशा की किरण हैं दीपक की लौ हैं जो इस अन्धकार को छिन्न भिन्न कर सकते हैं। **आर्य रत्न माननीय श्री पूनम सूरी** जी (सुपौत्र पू. महात्मा आनन्द स्वामी) प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा 24-25 नवम्बर (डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैण्ट, गया) में आयोजित कार्यक्रम में आपके विचारों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ तथा डेहरी ऑनसन में माननीय एस.के. शर्मा जी के विचारों को भी सुना जिसके द्वारा आपके ऋषि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने की प्रबल इच्छा तथा उसके प्रति तत्परता, निष्ठा और लगन को अनुभव किया। साथ ही आपकी ये कल्पना कि डी.ए.वी. का प्रत्येक प्राचार्य वैदिक विद्वान् एवं उपदेशक बन जाये बिल्कुल उचित है। परन्तु यह प्रयास साध्य है। **श्री पूनम सूरी जी** तथा आपकी समस्त प्रबन्ध मण्डली जो आपके निर्देशन में इस प्रकार के शिविरों का आयोजन कर बालकों में युवाओं में वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान के साथ-साथ नैतिक आदर्शों व मानवीय मूल्यों का आधान कर रही है। आप सबका ये प्रयास स्तुत्य है जो कभी निष्फल नहीं होगा यह तो सत्य है। पर शायद तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। अतः इसका एक ही मात्र उपाय है कि शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कदम उठाये जायें। और सभी विद्यालयों को गुरुकुलों में परिवर्त्तित कर दिया जाये जैसे मैक्समूलर ने सभी गुरुकुलों को अवैध घोषित कर उनके स्थान पर कान्वेण्ट स्कूल चलवाये जो भारतीयों की उन्नति के लिए या विकास के लिए नहीं अपितु गुलाम बनाने के लिये नीचा दिखाने के लिये था अकेले मद्रास में ही छोटे-बड़े मिलाकर एक लाख सन्तावन हजार गुरुकुलों को बन्द करवाया वैसे ही हमें सभी कान्वेण्ट स्कूलों को हटाकर उनके स्थान पर पुनः गुरुकुलों में परिवर्त्तित कर उसमें आधुनिक विषयों के साथ अपने श्रेष्ठ ग्रन्थों का वेद-उपवेद उपनिषद् ब्राह्मण मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, दर्शन आदि का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो तो अवश्य हमारा प्यारा आर्यावर्त्त पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगा।

इसी क्रम में अपने विद्यालय में भी सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक इतिहास, दर्शन, व्याकरण आदि की विशेष परीक्षायें, विशेष कक्षायें वर्ष भर चलती रहती हैं। इस समय लगभग 50 दिन का आवासीय शिविर चल रहा है जिसमें विशेष रूप से मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, नेपाल आदि की कन्यायें वेद-गीता, यज्ञ- कर्मकाण्ड, योग-व्यायाम, सिलाई-पेंटिंग, जूडो-कराटे आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। जो कि प्रतिवर्ष आयोजित होता है। जिसका अधिकाधिक लाभ स्थानीय तथा बाहर की कन्यायें उठायें, हमारी सदैव यही इच्छा रहती है।

◆

– डा. प्रीति विमर्शिनी

महर्षि पाणिनि की 'भारत को देन' विषय पर दिया गया भाषण

– हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
(भू.पू. वित्तमंत्री) वाराणसी

[यह लेख श्री **हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव** 'हरीश' जी द्वारा 87 वर्ष की उम्र में लिखित "**मेरा जीवन मेरे कार्य एवं विचार**" पुस्तक से उद्धृत है। जो कि सन् 2008 में अपने महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी के लिये लिखा गया था।

आज वे हमारे मध्य नहीं हैं। इसी 18 जनवरी 2015 में लगभग 90 वर्ष की अवस्था में उनका देहान्त हो गया। उनके पीछे उनकी धर्मपत्नी **डा. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव** उनके पुत्र **श्री सौरभ श्रीवास्तव** जो वर्त्तमान में अपने माता-पिता के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में सामाजिक संगठनात्मक कार्यों में रुचि ले रहे हैं।

सम्मान्य श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव जी द्वारा लिखित पुस्तक उनके जीवन की वह संघर्षपूर्ण कहानी है जिसमें सच्चा राष्ट्र प्रेम है संघ के कार्यों के लिये समर्पण है। वह संघ जो स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय देश के लिये समर्पित होने वाले सच्चे नवयुवकों का संगठन है जिसमें अनुशासन है, चरित्र है, देश भक्ति है, देश के लिये मर मिटने की भावना है। यह पुस्तक इन्हीं बातों का जीता जागता उदाहरण है इसलिये आज के नवयुवकों के लिये यह पुस्तक प्रेरणास्पद व पठनीय है।

वह बालक जिसके सिर से मात्र ढाई वर्ष की उम्र में ही माता-पिता की छत्रछाया उठ चुकी थी। जिसने संघ के कार्यों के लिये स्वयं को ऐसा समर्पित किया कि अपने विषय में सोचने का भी समय नहीं रहा यही कारण था कि लगभग 45 वर्ष की उम्र में आपका अर्न्तजातीय विवाह आपसे लगभग 15 वर्ष छोटी बसन्त कन्या महाविद्यालय वाराणसी में अर्थशास्त्र की प्रवक्ता **डा. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव** से हुआ अपने महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्या जनों के साथ इस परिवार का बहुत पुराना आत्मीय पारिवारिक सम्बन्ध रहा है। सम्मान्या बहिन जी (डा. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव) को हम लोग भी बहुत बचपन से विद्यालय के आरम्भिक काल से देखते, मिलते, सुनते आ रहे हैं। विद्यालय के हर कार्यक्रम में आपकी हरीश जी के साथ प्रेमपूर्वक साधिकार ससम्मान उपस्थिति होती रही है। लिखने को बहुत कुछ है। मैं इस अवसर पर सम्पूर्ण पाणिनि परिवार की ओर से आप आदरणीय हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 'हरीश' जी को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती हूँ व भैया सौरभ श्रीवास्तव जी को एक मजबूत कन्धे के रूप में देख रही हूँ। जो अपने माता-पिता के अनुरूप देश व समाज के हितकारी कार्यों में कभी पीछे नहीं रहेंगे यही कामना करती हूँ। **– सम्पा0**]

महत्त्व–

महर्षि पाणिनि ने भारत को न तो किसी युद्ध में विजय दिलाई और न ही भारत के बाहर जाकर यहाँ के धर्म और संस्कृति से संसार के अन्य देशों को परिचित कराया लेकिन उन्होंने जो कर दिखाया वह संसार को आज भी इस विस्मय में डाले हुए है कि क्या मानव मस्तिष्क इस प्रकार की रचना कर सकता है? उनके द्वारा रचित अष्टाध्यायी जैसा दूसरा व्याकरण

ग्रन्थ न तो अब तक रचा गया और न ही भविष्य में रचा जा सकता है। चार हजार सूत्रों वाले (वास्तविक संख्या 3995) इस ग्रन्थ में सूत्र परस्पर इस प्रकार एक दूसरे को संदर्भित करते हैं कि मानव मस्तिष्क की विराटता पर आश्चर्य होता है, शायद 'परम' नामक कम्प्यूटर भी इन सबका सामंजस्य बनाए रख सकता है या नहीं, इसमें सन्देह की गुंजाइश हो सकती है। संस्कृत व्याकरण के लम्बे विकास के मार्ग में पाणिनि ने उसे सर्वोच्च पूर्णता की स्थिति को प्राप्त कराया और उनके पहले के व्याकरणों में यास्क को छोड़कर किसी का भी व्याकरण जीवित भी नहीं रह सका। वे वैदिक और लौकिक भाषा के देहली पर खड़े दोनों ओर के प्रकाश स्तम्भ की भाँति हैं।

वैयाकरणों की दृष्टि में पाणिनि–

पाणिनि के समकालीन और सहपाठी कात्यायन उसके प्रथम समीक्षक हुए। शबरस्वामी जैसे विद्वानों के आधार पर ऐसा माना जाता है कि कात्यायन उनके विरोधी एवं आलोचक थे। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। जर्मनी के प्रो. कीलहार्न ने तर्क सहित इसका प्रतिवाद किया है। कात्यायन ने अपने वार्तिक सूत्रों का अन्त ही **भगवतः पाणिनेः सिद्धम्** कहकर किया है। कात्यायन की तरह पतञ्जलि ने भी पाणिनि के लिए सर्वत्र भगवान् शब्द का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त वे पाणिनि को प्रमाणभूत आचार्य, शब्दविदों में मूर्द्धाभिषिक्त, अनल्पमति आचार्य आदि कहकर उनकी अभ्यर्थना करते हैं। पतञ्जलि ने भी कात्यायन की तरह अपने ग्रन्थ महाभाष्य का समापन **भगवतः पाणिनेराचार्यस्य सिद्धम्** कह कर किया है। ऐसा कहा जाता है कि पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि इन तीनों की त्रयी ने संस्कृत व्याकरण की लोकप्रतिष्ठा की।

नाम एवं जीवन–

पाणिनि अष्टाध्यायी के रचयिता का असली नाम नहीं है वरन् यह उनका गोत्र नाम है जो वत्सभृगु गोत्र के अन्तर्गत आता है। उनके पाँच प्रवर हैं- भार्गव, च्यावन, अप्नवान, और्व तथा जामदग्न्य। कुछ बाद के ग्रन्थों में पाणिनि के लिए आहिक, शालंकी, दाक्षीपुत्र और शालातुरीय नाम आता है। इनमें पहले दो के विषय में कुछ अधिक नहीं कहा जा सकता। लेकिन दाक्षी पाणिनि के माता का गोत्र-नाम था। वैसे पश्चिमोत्तर में दक्ष नाम की एक जाति बसती थी। अन्य कई ग्रन्थों में दाक्षीकुल, दाक्षीकर्षः या दाक्षीकर्षुक, दाक्षीकन्था आदि ग्रामों के नाम मिलते हैं। यहाँ 'कन्था' ग्राम के लिए शक भाषा का शब्द है और अफगानिस्तान के ताशकन्द समरकन्द आदि नामों में देखने को मिलता है।

जहाँ तक शालातुरीय नाम का प्रश्न है शलातुर पाणिनि का गृह-ग्राम रहा होगा। कनिंघम ने इसकी पहचान लहुर नामक स्थान से की है। यह स्थान बलूचिस्तान के ओहिन्द क्षेत्र में काबुल नदी और सिन्धु नदी के संगम पर स्थित है।

पाणिनि के जीवन से सम्बन्धित कथायें–

पाणिनि के जीवनवृत्त से सम्बन्धित कथाएँ कुछ बाद के ग्रन्थों में मिल जाती हैं इनके अनुसार पाणिनि के गुरु का नाम वर्ष था। वह पढ़ाई में बहुत अच्छे नहीं थे। उन्हें मन्दबुद्धि कहा गया है। कात्यायन को

उनका प्रतिद्वन्द्वी कहा गया है। उन्होंने हिमालय के एकान्त में जाकर भगवान् शंकर की आराधना की और उनका वरदान प्राप्त किया जिससे उन्हें व्याकरण शास्त्र का ज्ञान प्राप्त हुआ और अपने उन्नत मस्तिष्क के बल पर उन्होंने अपने प्रतिद्वन्द्वी कात्यायन को बहुत पीछे छोड़ दिया। उनसे पहले के जितने व्याकरण थे, जिसमें ऐन्द्रव्याकरण भी शामिल है, पाणिनि के व्याकरण के आने पर नेपथ्य में चले गए। यह भी प्रसिद्धि है कि पाणिनि की मित्रता किसी नन्द राजा से थी। इसी आधार पर उनका काल पाँचवीं शताब्दी ईसापूर्व माना जाता है।

राजशेखर नामक विद्वान् का कहना है कि उस समय पाटलिपुत्र में '**शास्त्रकार परीक्षा**' नामक परिषद् थी जिसके सामने पाणिनि सहित अनेक विद्वानों ने अपनी कृतियाँ रखीं और मान्यता प्राप्त की। इनके नाम इस प्रकार हैं- **उपवर्ष, वर्ष, पाणिनि, पिंगल, व्याडि, वररुचि और पतञ्जलि**। इनमें उपवर्ष मीमांसा और वेदान्त के सर्वश्रेष्ठ भाष्यकार थे। वर्ष उनके छोटे भाई और पाणिनि के गुरु थे। पिंगल पाणिनि के छोटे भाई थे और '**छन्दोविचिति**' नामक ग्रन्थ के रचयिता थे। व्याडि '**संग्रहसूत्र**' नामक ग्रन्थ के रचयिता थे जिसकी बड़ी ख्याति थी। वररुचि नन्दराज के मंत्री थे और वैयाकरण के रूप में कात्यायन के नाम से प्रसिद्ध थे। पतञ्जलि ने महाभाष्य और योगसूत्र लिखा। **वासुदेव शरण अग्रवाल** जी का मत है कि ये नाम कालक्रम की दृष्टि से एक के बाद एक लिखे गए हैं।

पाणिनि की कार्य शैली–

'पाणिनि में बचपन से ही लोगों और चीजों के बारे में अपार जिज्ञासा थी। ज्ञान के लिए वे खूब घूमे और शब्दों का विशाल संग्रह एकत्र किया।' ये बातें उनके ग्रन्थ के अध्ययन के बाद कही जा सकती हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि इसके लिए प्रयुक्त सामग्री उनके अपार व्यक्तिगत एवं प्रत्यक्ष ज्ञान का परिणाम है। पाणिनि में हम जीवन्तता तथा सामान्य जन की भाषा और उनके जीवनशैली के प्रति सहृदय एवं लचीला दृष्टिकोण पाते हैं। अष्टाध्यायी के अध्ययन से लगता है कि उन्होंने देश में उपलब्ध समस्त भाषाशास्त्रीय सामग्री का अध्यवसाय तथा सूक्ष्मता पूर्वक संग्रह किया जिसमें लोक-बोलियाँ, लोक-कथाएँ, स्थानीय रीति-रिवाज, किसी खास क्षेत्र में पूजित 'विशाल' जैसे यक्ष देवता का नाम, पीलू जैसे छोटे बेरों के नाम से लेकर पूर्वी क्षेत्र में प्रचलित खेलों के नाम, विभिन्न स्थानों में प्रचलित सिक्के, स्थानीय मापतौल के नाम आदि कुछ भी तो नहीं छोड़ा है उन्होंने। व्यास नदी के दोनों ओर प्रचलित कुओं के नामों के उच्चारण भेदों का उल्लेख उनके सूक्ष्म निरीक्षण का ही परिणाम है। काशिकाकार ने इसे सूत्रकार की सूक्ष्म निरीक्षण का परिणाम माना है। डॉ. अग्रवाल ने पाणिनि के अष्टाध्यायी के आधार पर जो चित्र हमारे देश का प्रस्तुत किया है वह ऋषि के विराट् एवं सूक्ष्म दर्शन की पुष्टि करता है।

अन्त में यही कहना उपयुक्त होगा कि ऋषि पाणिनि भारतीय प्रज्ञा के उच्चतम प्रतिमान थे जिस ऊँचाई को अब तक कोई दूसरा छू भी नहीं सका है।

◆

मुस्लिम लड़कियाँ पढ़ रही हैं वेद

संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसका परम्परागत रूप से जुड़ाव हिन्दुत्व से रहा है लेकिन इस सोच को तोड़ते हुए झारखण्ड के दो स्कूलों में लगभग 100 मुस्लिम लड़कियाँ है जो संस्कृत पढ़ रही हैं वैकल्पिक के रूप में इन सभी लड़कियों ने उर्दू या पार्शियन के बजाय संस्कृत भाषा चुनी है। इन सभी लड़कियों का कहना है कि यह अच्छी भाषा है इसे सीखना आसान है और इसमें अच्छे अंक हासिल किये जा सकते हैं। इन स्कूलों में सर पर दुपट्टा रखे वेद और उपनिषद् पढ़ती लड़कियों को आसानी से देखा जा सकता है, तो क्या संस्कृत पढ़ती इन लड़कियों के माता-पिता इनका विरोध कर रहे हैं? इसका जवाब है 10वीं में पढ़ रही शालू निशा के पास वो कहती हैं कि मेरे माता-पिता ने कभी संस्कृत पढ़ने का विरोध नहीं किया बल्कि जब विषय चुनना था तो उन्हीं ने जोर दिया कि उर्दू के बजाय अपना विषय संस्कृत चुना जाए। "स्कूल के प्रिंसिपल शिव शंकर पोद्दार भी अपने स्कूल में 9वीं और 10वीं के बच्चों को संस्कृत पढ़ा चुके हैं। उनका कहना है कि मुझे इन सारे बच्चों का संस्कृत के प्रति जो प्रेम है वो बेहद प्रेरित करता है। खासतौर पर स्कूल में पढ़ने वाली मुस्लिम बच्चियों का इस भाषा के प्रति लगाव मुझे बहुत गौरवान्वित करता है। विषय चुनना पूरी तरह से बच्चों या उनके परिवार की इच्छा पर निर्भर करता है। विषय चुनने के लिए बच्चों पर किसी तरह का कोई दवाब नहीं डाला जाता।"

विषय चुनना इच्छा पर निर्भर–

1. इसके अलावा उन्हें किसी तरह के श्लोक या संस्कृत की प्रार्थनाओं के लिए कोई जोर नहीं दिया जाता।

2. लेकिन आश्चर्यजनक रूप से लड़कियों का इस भाषा के प्रति झुकाव ही इतना है कि सभी लड़कियों के अंक 80 से भी ज्यादा हैं।

3. गोमोह आजाद हिन्द स्कूल के प्रिंसिपल अंजन मिश्र का कहना है कि हमारे स्कूल में उर्दू के लिए स्थाई शिक्षक हैं।

4. लेकिन यदि बच्चों की पसन्द संस्कृत पढ़ने की है तो उन्हें रोक नहीं सकते। तामल आलम एक सरकारी स्कूल से पढ़े छात्र हैं और संस्कृत के शिक्षक बनना चाहते हैं।

5. वे बड़े उत्साह से इस बात को कहते हैं कि वे संस्कृत के अच्छे जानकार हैं और वे बच्चों को पढ़ायेंगे। उनका कहना है कि वे बच्चों को पढ़ायेंगे भी और उनकी अच्छी नौकरी भी सुनिश्चित करेंगे।

[आपको जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि जालना (महाराष्ट्र) में एक विद्यालय है आर्य हिन्दी विद्यालय, इस विद्यालय में लगभग 400 मुस्लिम लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं और सभी बच्चे मन्त्रोच्चारण करते हैं हवन करते व संस्कृत पढ़ते हैं। पिछले वर्ष मेरा महाराष्ट्र जाना हुआ यह दृश्य मैं स्वयं देखकर आई हूँ। श्रीमती आयशा खान जो वहाँ संस्कृत की अध्यापिका हैं उन्होंने मेरा जिस तरह स्वागत किया वह प्रशंसनीय था। स्थानीय आर्य जनों के द्वारा संचालित है यह विद्यालय, श्री सन्तोष आर्य जी इसके निदेशक हैं। – सम्पा0]

◆

अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास

गत 2014 अप्रैल मास **रामनवमी** के दिन **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** में नवनिर्मित **अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास** का उद्घाटन हुआ। जिसमें पिछले वर्ष मई-जून मास ग्रीष्मावकाश में त्रिपुरा आदि की 9वीं 10वीं पास लगभग 25 बड़ी कन्याओं ने विधिवत् शिविर में भाग लेकर संस्कृत, संगीत, ताइक्वाण्डो, गीता, यज्ञ मन्त्रोच्चारण आदि का प्रशिक्षण लिया इस वर्ष भी इसी प्रकार का प्रशिक्षण शिविर बड़ी कन्याओं के लिये चल रहा है जो जून मास तक चलेगा।

बड़ी कन्याओं के लिये निर्मित इस महिला छात्रावास में रहकर कोई ज्योतिष पढ़ रही है कोई व्याकरण तो कोई मन्त्रोच्चारण गीता आदि का पाठ सीख रही है।

प्रसन्नता की बात है इस छात्रावास को सर्वप्रथम जिस छात्रा ने अन्तर्राष्ट्रिय बनाया वह है कैलिफोर्निया निवासिनी बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा कु0 **संजना शुक्ला**। जिसके माता-पिता मूल भारतीय हैं इसका जन्म वहीं अमेरिका में हुआ जो वहीं के गुण-दोष से प्रभावित हो रही थी किन्तु छुट्टियों में भारत आने पर उसके माता-पिता ने ऐसी योजना बनाई जिससे वह अपने भारतीय मूल के संस्कारों से सिंचित हो और यहाँ प्रवेश करा दिया।

इस छात्रा ने गजब का अनुशासन दिखाते हुए यहाँ प्रातः काल 4 बजे उठने से लेकर अपने कपड़े धोना बर्तन धोना कमरे की सफाई करना आदि गुरुकुलीय नियमों का पालन करते हुए योग संगीत गीता आदि के साथ सन्ध्या यज्ञ के मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण जो कि उसके लिये बहुत कठिन था उसने बहुत अच्छी तरह सीखा और अब अपने देश में जाकर वह नित्य यज्ञ कर रही है और अनेक ऐसे मूल भारतीय लड़के लड़कियों को जो लालायित हैं इस विद्या को सीखने के लिये उन्हें सफलता पूर्वक प्रशिक्षण देने का कार्य भी आरम्भ कर चुकी है उसकी सम्पूर्ण जीवन शैली ही बदल चुकी है। यह उसके दादा-दादी ने हमें बताया।

उसके अन्दर ऐसे संस्कारों के विकसित होने का कारण उसके माता-पिता ही नहीं दादा-दादी हैं। इसके दादा-दादी **डॉ. वेणी माधव शुक्ला** जो कि गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति हैं इसकी दादी **डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला** जो कि बी.एच.यू. में पढ़ाती रही है। जीवन में महिलाओं के अधिकारों के लिये बड़े संघर्ष किये हैं। इसके चाचा **डॉ. कृष्ण कान्त शुक्ल** जो अमेरिका में सर्विस कर रहे थे परन्तु अब कई वर्षों से उस सर्विस को लात मार कर भारत में ही घूम-घूम कर अध्यात्म, संगीत, भारत स्वाभिमान को अपना कर जन जागरण कर रहे हैं। इनकी बहुत इच्छा है लोग अपनी संस्कृति को अपनायें और अपने पुरातन गौरव को स्वीकार करें।

◆

डाक टिकटों में आर्यसमाज

– सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी

गुजरात के एक गाँव में ब्राह्मण कुल में जन्मे मूलशंकर आज स्वामी दयानन्द के नाम से विश्वप्रसिद्ध हैं। स्वराज्य के प्रथम संदेशवाहक, समाज सुधारक, युग प्रवर्तक, तत्वदर्शी, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रवर्तक, स्वतन्त्रता संग्राम के मंत्र की हुंकार भरने वाले महर्षि दयानन्द को कौन नहीं जानता। इन्होंने आर्यसमाज की स्थापना कर, समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वास को जड़ से उखाड़ फैंकने में अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। भारत सरकार के संचार मंत्रालय के डाक विभाग ने समय-समय पर आर्यसमाज के संदर्भ में कई डाक टिकटें प्रकाशित कर, अपने को सौभाग्यशाली माना है।

मूलशंकर अपना गाँव छोड़कर अनेक स्थानों पर घूमने के दौरान स्वामी विरजानन्द की सेवा में पहुँचे। नेत्रहीन होते हुए भी स्वामी जी ने मूलशंकर को खूब जांचा-परखा और उनके भीतर छिपी प्रतिभा तथा दृढ़ता को देखते हुए उन्हें युग प्रवर्तक से स्वामी दयानन्द बना दिया। तभी से दयानन्द वेदों के प्रचार-प्रसार में लग गये। वेदों का संस्कृत के साथ हिन्दी में अनुवाद किया तथा सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। समाज को उन्नतशील बनाने के प्रति देश-भ्रमण किये। ईश्वर को सर्वव्यापी, अन्तर्यामी, निराकार तथा अजन्मा बताया। हिन्दी भाषी न होते हुए भी स्वामी दयानन्द ने देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए हिन्दी भाषा को ही सबसे श्रेष्ठ माध्यम बताया। हमारा देश स्वामी दयानन्द का ऋणी रहेगा, जिन्होंने भारत से अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंकने हेतु राष्ट्रीय भावना का संदेश देशवासियों को देकर जागृत किया। साथ ही कन्या-शिक्षा की महत्ता को समझाते हुए उन्हें शिक्षित करने, लोगों को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने के प्रति विशेष बल दिया। डाक विभाग ने इस ऋषि के सम्मान में 4 मार्च 1962 को 15 पैसे का डाक टिकट जारी किया। भगवा रंग में बने इस टिकट पर स्वामी दयानन्द के चित्र को अंकित कर भारत सरकार अपने को धन्य मानता है।

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक राष्ट्रवाद के उद्घोषक अमर हुतात्मा **स्वामी श्रद्धानन्द**, जिन्होंने आर्य

संस्कृति की रक्षा हेतु पाखण्ड, छुआछूत, ढोंग आदि के खिलाफ आन्दोलन चलाया, अंधविश्वास को दूर करने के प्रति जीवन समर्पित करने वाले इस संत ने जामा मस्जिद से 'ह' से हिन्दू, 'म' से मुसलमान, दोनों को मिलाकर कार्य करने का संदेश देकर देश की अखण्डता में मजबूती प्रदान करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द के सम्मान में भारत सरकार ने इनकी याद में 30 मार्च 1970 को 20 पैसे का डाक टिकट प्रकाशित कर, श्रद्धासुमन अर्पित किया।

निर्भीक, सत्यवक्ता, क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रप्रेमी ऋषि दयानन्द सरस्वती के गुरु स्वामी विरजानन्द की स्मृति में भी डाक विभाग ने 14 सितम्बर 1981 को 20 पैसे का डाक टिकट जारी किया, जिस पर स्वामी जी की आसन मुद्रा को दर्शाया गया है।

भारतीय डाक विभाग ने आर्यसमाज की शताब्दी वर्ष की स्मृति में 25 पैसे का डाक टिकट 11 अप्रैल 1975 को जारी किया, जिस पर यज्ञ में जलते हुए लौ को दिखाया गया है।

सुधारवादी आन्दोलन, आर्यसमाज के संस्थापक, महर्षि दयानन्द का विश्वास था कि केवल शिक्षा ही समाज में जागृति ला सकती है। यह उनके कार्यकाल में संभव नहीं हो सका, लेकिन उनके अवसान के पश्चात् इनके अनुयायियों द्वारा ऋषि के सपनों को साकार करने के उद्देश्य से डीएवी आन्दोलन के दौरान स्कूल का शुभारम्भ किया। सबसे पहले यह स्कूल जून 1886 को लाहौर में खुला। यह डीएवी संस्थान सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी तैयार करने, उनमें समर्पण, देशभक्ति तथा अनुशासन की भावना भरने के लिए विश्वविख्यात है। डीएवी द्वारा शिक्षा और समाज के क्षेत्र में किया गया आन्दोलन उल्लेखनीय है। इस समय आर्यसमाज के देश-देशान्तरों में हजारों स्कूल-कॉलेज चल रहे हैं, जिनमें हर साल लाखों छात्र-छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

डाक विभाग ने डीएवी आन्दोलन शताब्दी वर्ष पर एक रुपये का डाक टिकट 27 जून 1989 में जारी किया, जिस पर सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के साथ दीपक की लौ में '**तमसो मा ज्योतिर्गमय**' लिखा हुआ है, तथा साथ में गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करते हुए बच्चों और कम्प्यूटर के साथ बच्चियों को दर्शाया गया है। टिकट में एक कॉलेज को भी चित्रित किया गया है।

आर्यसमाज के संगठन ने पूरे संसार को एक नई दिशा दी है। इसके कर्तव्य और सिद्धान्तों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। सारी बुराइयों के खिलाफ तेजी लाकर सामाजिक सुधार की पहल कर देश को मजबूती प्रदान करने, आर्यसमाज के 125 वर्ष पूरा होने पर 5 अप्रैल 2000 को 3 रुपये का आकर्षक, खूबसूरत डाक टिकट जारी किया गया, जिस पर स्वामी दयानन्द के चित्र सहित प्रकाशपुंज के साथ उनके संदेश '**तमसो मा ज्योतिर्गमय**' और इसके प्रथम आवरण पर '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' अंकित किया गया। साथ ही टिकट में वेदग्रन्थ के पन्नों पर सबको शिक्षा, ज्ञान का प्रकाश प्राप्ति तथा सत्य का प्रकाश लिखा हुआ है। इसके माध्यम से भारत सरकार ने आर्यसमाज के समर्पण और भावना तथा अंधकार से प्रकाश में ले जाने के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित की है।

– कुदरा, कैमूर, रोहतास (बिहार)

◆

सामान्य रोगों की सुगम चिकित्सा

– डा० अजीत मेहता

पथरी (गुर्दे व मूत्राशय की) नष्ट करने के लिए रामबाण कुल्थी–

250 ग्राम कुल्थी कंकड़ पत्थर निकालकर साफ कर लें और पहले इसे रात में तीन किलो पानी में भिगो दें। फिर सबेरे भीगी हुई कुल्थी सहित उसी पानी को धीमी-धीमी आग पर लगभग चार घंटे पकाएँ और जब एक किलो पानी रह जाय (जो काले चनों के सूप की तरह होता है) तब नीचे उतार लें। फिर तीस ग्राम से पचास ग्राम (पाचन शक्ति के अनुसार) देशी घी का उसमें छौंक लगायें। छौंक में थोड़ा सा सैंधा नमक, काली मिर्च, जीरा, हल्दी डाल सकते हैं। बस भोजन का भोजन और स्वादिष्ट सूप के साथ पथरी नाशक औषधि तैयार है।

प्रयोग विधि– दिन में एक बार दोपहर के भोजन के स्थान पर बारह बजे यह सारा सूप पी जायें। कम-से-कम 250 ग्राम अवश्य पीएँ। एक-दो सप्ताह में इससे गुर्दे तथा मूत्राशय की पथरी गलकर बिना आपरेशन के बाहर आ जाती है।

विशेष– कुल्थी का इस्तेमाल (दाल, लोबिया, और चनों के सूप के रूप में) कमर-दर्द की भी रामबाण दवा है। कुल्थी की दाल साधारण दालों की तरह पकाकर रोटी के साथ प्रतिदिन खाने से भी पथरी पेशाब के रास्ते टुकड़े-टुकड़े होकर निकल जाती है। यह दाल मज्जा (हड्डियों के अन्दर की चिकनाई) बढ़ाने वाली है। गुणों की दृष्टि से कुल्थी पथरी एवं शर्करानाशक है। वात एवं कफ का शमन करने वाली होती है और शरीर में उनका संचय रोकने वाली होती है। कुल्थी में पथरी का भेदन तथा मूत्रल दोनों गुण होने से यह पथरी बनने की प्रवृत्ति और पुनरावृत्ति रोकती है। इसके अतिरिक्त यह यकृत व प्लीहा के दोष में लाभदायक है और निरन्तर प्रयोग करने से धीरे-धीरे मोटापा भी दूर होता है।

कुल्थी भिगोकर बनाया गया कुल्थी का पानी पीना– किसी कांच के गिलास में 250 ग्राम पानी में 20 ग्राम कुल्थी डालकर ढककर रात भर भीगने दें। प्रातः एक और कांच का गिलास लेकर उसमें उलट पलट कर लें या प्लास्टिक के चम्मच से अच्छी तरह हिलाकर इस कुल्थी के पानी को खाली पेट पी लें। फिर उतना ही नया पानी उसी कुल्थी के गिलास में और डाल दें जिसे दोपहर में पी लें। दोपहर में कुल्थी का पानी पीने के बाद पुनः उतना ही नया पानी शाम को पीने के लिए डाल दें। इस प्रकार रात में भिगोई गई कुल्थी का पानी अगले दिन तीन बार सुबह, दोपहर शाम पीने के बाद उन कुल्थी के दानों को फेंक दें, और उनके स्थान पर 20 ग्राम नये कुल्थी के दाने लेकर अगले दिन के लिए इसी प्रकार पानी में भिगोने रख दें।

इस विधि से कुल्थी का पानी बना-बनाकर रोजाना तीन बार आवश्यकतानुसार एक महीने से तीन महीने तक पीते रहने से गुर्दे और मूत्राशय की पथरी धीरे-धीरे गलकर निकल जाती है तथा दुबारा पथरियाँ बनने की प्रक्रिया से भी बचाव होता है। इसके अतिरिक्त इस कुल्थी के पानी के सेवन से अधिक रक्तचाप व बढ़ा हुआ कोलेस्ट्राल घटता है, गुर्दे का संक्रमण और अन्य रोगों में भी लाभ पहुँचाता है।

सहायक उपचार– कुल्थी के पानी के साथ, हिमालय ड्रग कम्पनी की सिस्टोन (Cystone) की दो गोलियाँ दिन में 2-3 बार प्रतिदिन लेने से शीघ्र लाभ होता है। यह दवा पथरी को बाहर निकालने के लिए निरापद प्रमाणित हुई है। कुछ समय तक नियमित सेवन करने से पथरी टूट-टूटकर बाहर निकल जाती है। यह मूत्रमार्ग में पथरी, मूत्र में क्रिस्टल आना, मूत्र में जलन आदि में दी जाती है।

5. (अ) यकृत् एवं पित्ताशय की पथरी (Gall Hladder Stone)

बादाम गिरी 6 नग, मुनक्का 6 नग, मगज खरबूजा 4 ग्राम, छोटी इलायची 2 नग, मिश्री 10 ग्राम इन पाँचों को ठंडाई की तरह बारीक घोंटकर आधा कप पानी में मिलाकर छानकर देने से पित्ताशय की पथरी में चमत्कारी लाभ मिलता है जबकि निम्नलिखित लक्षण रहें। यकृत के नीचे दर्द हो, साथ में उल्टी होने पर कुछ आराम मिले। पुनः दर्द हो और दर्द बराबर बना रहे।

अनुभव– "अभी थोड़े समय पहले हमारे मित्र की लड़की को एक्स-रे तथा सोनोग्राफी द्वारा यकृत एवं पित्ताशय की पथरी बताई गई और आपरेशन की सलाह दी गई। उन्होंने मुझसे सम्पर्क किया। मैंने उपरोक्त योग सेवन करने को कहा। 10 दिन में लड़की ठीक हो गई। 3-4 मास हो गये, उसे दर्द, उल्टी आदि विकार नहीं है। मैंने एक यकृत शूल (Liver Pain) के रोगी को इस योग का प्रयोग करवाया तो उसे लाभ हुआ। यह पित्तस्राव को नियमित करने वाला योग है।" यह अनुभव **डॉ. तेज बहादुर चौधरी**, आयुर्वेदाचार्य, नवागढ़, दुर्ग (म.प्र.) का है।

विशेष– (1) पित्त-पथरी कैसे बनती है– पित्ताशय यकृत (लीवर) के नीचे स्थित होता है और इसी में पित्त (पाचक-पित्त) जमा होता है, जहाँ से वह छोटी आंत में जाकर पाचन-क्रिया में सहायता करता है। पित्ताशय में ही पित्त-पथरी निर्माण करने वाले कोलेस्ट्राल (चर्बी) का भी संचय होता है। यह कोलेस्ट्राल पित्ताशय में जमा पित्त में घुलनशील होता है परन्तु कई बार, स्थायी कब्ज, अम्लता, अनियमित, असन्तुलित और जल्दी न पचने वाला भोजन, मद्यपान, मांसाहार आदि के परिणामस्वरूप पाचन क्रिया मन्द हो जाने के कारण पित्ताशय में कोलेस्ट्राल नहीं घुल पाता तो संचित होकर दूषित द्रव्यों के संयोग से पथरी का रूप धारण कर लेता है। जिसे पित्तपथरी (Gall Stone) कहते हैं। शुरुआत में पथरी बालू के कण की आकृति से, दूषित पदार्थों के संयोग से, क्रमशः बढ़कर बड़े आकार की हो जाती है। छोटे आकार की पथरियाँ पित्तनली (Com-

mon Bile Duct) की राह से निकलकर आंतों में प्रवेश कर जाती हैं और मल के साथ निकल भी जाती हैं और रोगी को इनके होने का पता ही नहीं चलता परन्तु बड़े आकार की पथरियाँ जब पित्तनली के अन्दर प्रवेश करती हैं तो भयानक कष्ट होता है और जब तक ये पथरियाँ साधारण पित्त प्रणाली के रास्ते से हट नहीं जातीं या आंतों के भीतर नहीं पहुँच जातीं तब तक यह भयानक दर्द होता रहता है जो पित्तपथरी शूल (Gall Stone Colic) कहलाता है। (2) **पित्तपथरी के लक्षण–** शुरुआत में रोगी को भोजन के बाद पित्ताशय के आसपास बेचैनी-सी महसूस होती है। फिर पेट में दर्द नाभि के ऊपर या दाहिनी ओर नीचे की तरफ पित्ताशय के आसपास मालूम होता है जो हल्का होता है जो प्रायः खाना खाने के बाद शुरु होता है और उल्टी होने के बाद ही कुछ आराम मिलता है। रोग अधिक पुराना होने पर खाने में अरुचि होने लगती है और पेट का दर्द भी बढ़ जाता है। पथरी बड़ी होने पर दर्द पेट के पूरे हिस्से में होने लगता है और कभी-कभी दाहिने कन्धे तक बढ़ जाता है। यह दर्द ऐंठन जैसा तेज होता है जो अचानक आरम्भ होता है तथा कुछ घण्टों तक बना रहता है। तेज दर्द में उल्टियाँ भी हो सकती हैं। पथरी के पित्तनली में अटक जाने से कई बार सिर में चक्कर और तेज बुखार भी आ सकता है। अल्ट्रा साउण्ड के द्वारा पथरियों की संख्या और स्थिति का पता चल जाता है। (3) **पथरी से बचने के उपाय–** चाहे पित्ताशय की पथरी हो या गुर्दे की सभी पथरियों की उत्पत्ति का सम्बन्ध विभिन्न स्राव की ग्रन्थियों (Secretions System) की क्रियाशीलता से होता है। जब गलत-आहार विहारजन्य वात पित्त कफ दोष बढ़ने के कारण शरीर की पाचन प्रणाली और स्रावक प्रणाली (Secretions System) का कार्य सुचारु रूप से नहीं होता तब दूषित पदार्थ मूत्रादि में घुलकर निकलने की बजाय गुर्दे या पित्ताशय में संचित होकर मूत्रपथरी या पित्तपथरी का रूप ग्रहण कर लेते हैं। अतः खान-पान सुधारने तथा ऋतु के अनुसार आयुर्वेदिक तरीके से विरेचन आदि षट्कर्म से शरीर का शोधन करते रहना चाहिए। इससे पथरी होने का डर नहीं रहता। (4) **पित्तपथरी के पथ्यापथ्य–** पित्त पथरी में पथ्यापथ्य पालन करने का विशेष महत्व है। **पथ्य–** जौ, मूँग की छिलके वाली दाल, चावल, परवल, तुरई, लौकी, करेला, मोसम्मी, अनार, आँवला, मुनक्का, ग्वारपाठा, जैतून का तेल आदि। भोजन सादा, बिना घी-तेल वाला तथा आसानी से पचने वाला करें और योगाभ्यास करें। **अपथ्य–** मांसाहार, शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन, उड़द, गेहूँ, पनीर, दूध की मिठाइयाँ, नमकीन, तीखे, मसालेदार तले हुए खट्टे खमीर उठाकर बनाये गये खाद्य पदार्थ जैसे इडली, डोसा, ढोकला आदि। अधिक चर्बी, मसाले एवं प्रोटीन के सेवन से यकृत् व प्लीहा के खराब होने की सम्भावना बढ़ जाती है और फलस्वरूप रक्त की शुद्धि नहीं हो पाती। अतः पाचन में भारी, खासकर तली हुई और अम्ल बढ़ाने वाली चीजों के सेवन से परहेज रखें और भूख के बिना भोजन न करें। ◆

मां-शत शत वंदन शत शत प्रणाम

– रोचना भारती

[आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा गुरुकुल की सुयोग्य स्नातिका पं. ज्ञानेन्द्र जी सिद्धान्त भूषण की विदुषी पत्नी **श्रीमती अनिला देवी काव्यतीर्थ** का निधन इसी 17 नवम्बर 2014 को 94 वर्ष की आयु में हो गया। दूरभाष द्वारा इसकी सूचना मुझे उनकी सुयोग्य पुत्री **श्रीमती रोचना भारती** जी ने दी। श्रद्धा से सिर झुक गया वाणी मौन हो गई। मात्र 29 वर्ष की अल्पायु में पति का वियोग छोटे-छोटे 3 बच्चों का लालन-पालन उन्हें संस्कार देना कदम-कदम पर अपने स्वाभिमान की स्वत्व की रक्षा करते हुए पूरे आत्मविश्वास के साथ संघर्षपूर्ण लम्बा उज्ज्वल जीवन वीराङ्गना नारी की भाँति व्यतीत करना बड़े गौरव की बात है। आपकी पुत्री रोचना भारती जी के अदम्य साहस, ज्ञान की लालसा व स्वाध्याय विषय में क्या कहूँ जिन्होंने 61 वर्ष की आयु व्यतीत करने के बाद रिसर्च करने का मन बनाया और **यज्ञ एवं पर्यावरण एक समीक्षात्मक अध्ययन** विषय पर शोध-प्रबन्ध लिख कर, डाक्टरेट उपाधि प्राप्त कर सब को चमत्कृत कर दिया। यह है निरन्तर स्वाध्याय और लगन का परिणाम जिसके पीछे कारण है माता-पिता के संस्कार विशेष रूप से माता के क्योंकि 4 वर्ष की अल्पायु में ही पिता का वियोग हो जाना फिर सारा दायित्व तो माता पर ही था जिसे माता अनिला आर्या जी ने बखूबी निभाया यही कह सकती हूँ। **पाणिनि कन्या महाविद्यालय** से यहाँ की पूज्या आचार्या जी के साथ आपका गहरा आत्मीय सम्बन्ध था जो अभी तक विद्यमान है सम्मान्या रोचना भारती जी की बेटी भी इन्हीं संस्कारों में पली पगी हैं। जिनसे बाम्बे जाने पर मिलना होता रहता है गुरुकुलों का सहयोग करना उत्तम कार्यों में उदारता पूर्वक दान देना आपका स्वभाव है पूज्या माता जी का संक्षिप्त जीवनवृत्त उनकी सुपुत्री रोचना भारती जी द्वारा लिखित एक सुदृढ़ आर्य वीरांगना का जीवनवृत्त है जो कि पठनीय है। **सम्पा०]**

मां ने अपनी एक डायरी में दस वर्ष पूर्व दिनांक 27.09.2004 को अपनी अन्तिम अभिलाषा इस प्रकार लिखी थी–

आर्य कन्या महाविद्यालय (बड़ौदा) में कुम्भ के मेले का मूक अभिनय बालिकाओं ने किया था। उस अवसर पर मुझे **महर्षि दयानन्द** का पार्ट दिया गया था, जिसमें वे पाखण्ड खण्डिनी पताका लेकर उद्घोष कर रहे थे। ईश्वर ऐसी कृपा करें कि यह जीवन तो पारिवारिक झमेलों में व्यतीत हो गया किन्तु नया जीवन अलौकिक प्रतिभा, उत्साह, पराक्रम एवं अद्भुत वैदिक वाङ्मय को और तार्किक प्रज्ञा को लेकर संसार से नितान्त विरक्त रहते हुए धरती पर अवतरित होऊँ और महर्षि की वैदिक पताका लेकर विश्व में हमारी वेदवाणी का प्रचार-प्रसार

करके सर्वत्र सुख-शान्ति एवं आनन्द की धारा प्रवाहित करूँ। पुनः सर्वत्र हमारी अमृतमयी वेदवाणी चरितार्थ हो, घर-घर में वैदिक आलोक का प्रकाश हो और सुख-शान्ति का साम्राज्य हो। मेरी मां **श्रीमती अनिला देवी जी** 'काव्यतीर्थ का जन्म 22 दिसम्बर 1920 मालवा में धार (मध्य प्रदेश) के पास अमझेरा गाँव में हुआ था। बचपन से ही विशेष प्रतिभायुक्त होने के कारण उनके पूज्य पिताजी ने संस्कृत पढ़ने के लिये छः वर्ष की आयु में ही इलाहाबाद भेज दिया। वहाँ छोटी आयु में कष्ट होने के उपरान्त भी दो वर्ष में चार कक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं और पारितोषिक प्राप्त किया। वहाँ का प्रबन्ध उचित न देखकर नानाजी मां को ले आए और आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में प्रवेश करवाया। वहाँ स्नातिका तक पूर्ण अध्ययन प्रथम श्रेणी में प्राप्त किया। भारती समलंकृता की उपाधि प्राप्त की।

मां अपने माता-पिता के प्रति सदा कृतज्ञ भाव से कहा करती थीं कि– मेरे पिताजी ने 16 वर्ष की आयु में आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवन यापन किया। तदनुसार मुझे व मेरी बहन को कन्या गुरुकुल में पढ़ाया। जब उन्हें रु. 40/- प्रति माह वेतन मिलता था तब भी रु. 20/- हमारी फीस देते थे। अनेक कष्ट सहकर हमें शिक्षित किया मेरी पूज्या माताजी कहती थीं– **माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा**। उनकी इसी भावना ने हमें योग्य बनाया। भीषण कष्ट की घड़ी में माता-पिता के संस्कार और शिक्षा-दीक्षा ही सहायक रही है। मां का विद्यार्थी जीवन स्वर्ण काल रहा। प्रत्येक कार्य पढ़ाई, व्यायाम, आसन, प्राणायाम, घुड़सवारी, धनुष बाण चलाना, वक्तृत्व कला आदि में अन्त तक सर्वप्रथम रहीं। गुरुकुल में सब मां को आदर्श मानते थे। इन्हीं गुणों के कारण जीवन में सदा स्वाभिमान बना रहा। मां का हम बच्चों में मोह इतना अधिक था कि हमारे अपनी गृहस्थियों में व्यस्त रहने के बाद भी वे हमें छोड़कर अधिक समय के लिये कहीं जाना नहीं चाहती थीं। हमारे बहुत समझाने पर भी उन्होंने अच्छे-अच्छे प्रगति के अवसर भी नकार दिये।

मेरे पिता **पं. ज्ञानेन्द्र जी 'सिद्धान्त भूषण'** का जन्म 7 अगस्त 1910 में गुजरात में बड़ौदा के पास आणन्द में हुआ था। दुर्भाग्यवश बाल्यकाल में ही माता-पिता का दुसःह वियोग झेलना पड़ा। प्रारम्भिक शिक्षण बड़ौदा में ही हुआ, तत्पश्चात् हाईस्कूल में शिक्षा पाने लगे। एक बार एक ईसाई शिक्षक से धर्म पर वाद-विवाद होने के कारण उनकी प्रवृत्ति धर्म सम्बन्धी अध्ययन की ओर हो गई। अतः इसी उद्देश्य को सम्मुख रखकर उन्होंने श्री दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में तीन वर्ष तक अध्ययन किया। वे अपने आचार्य पूजनीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के अत्यन्त प्रिय शिष्य थे। एक वर्ष पंजाब में धर्म प्रचार किया तत्पश्चात् आचार्य जी के आदेश पर अपने ही प्रान्त गुजरात में कुछ समय सूपा गुरुकुल में कार्य करने के पश्चात् स्वतन्त्र रूप से कार्य करने लगे। उनके सादे रहन-सहन,

प्रतिभाशाली वाणी और ओजस्वी लेखनी ने शीघ्र ही उनका परिचय जनता से करा दिया और मुम्बई और गुजरात प्रान्त में बहुत अच्छा प्रभाव हो गया। उस समय वे ब्रह्मचारी थे और उनमें अखण्ड कार्यशक्ति भी थी। सूरत के पास उन्होंने एक ज्ञानमन्दिर खोला था। ऐसे सक्षम कार्यकर्ता को सप्तम सर्वाधिकारी के रूप में पाकर सत्याग्रह संग्राम और गुजरात प्रान्त का गौरव बढ़ने लगा। कार्यभार सम्भालते ही गुजरात प्रान्त के आणन्द, भावनगर, पोरबन्दर, राजकोट, राजस्थान व पूना आदि अनेक स्थानों पर प्रचण्ड भाषण देकर जन-जन को उद्बोधन दिया। उन्होंने अपने प्रखर ओजस्वी प्रवचन और लेखन आदि से वेद, यज्ञ एवं आर्यसमाज का निरन्तर प्रचार किया।

9 सितम्बर 1940 अमझेरा (मालवा) निवासी **श्रीमान् भीमशंकर आर्य** जी की सुपुत्री आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की स्नातिका उन्हीं की तरह प्रखर बुद्धि और ओजस्वी वाणी की धनी **श्रीमती अनिला देवी** अर्थात् मेरी मां से अत्यन्त सादगी से फूलों के हार और फूलों के बने कंगन हाथ में, बिना किनारी की शुभ्र खादी की साड़ी पहन कर वैदिक पवित्र मन्त्रोच्चार के साथ हुआ। गृहस्थाश्रम में प्रवेश तो किया किन्तु देश और धर्म के प्रति समर्पित यह युगल मधुरजनी बिताए बिना ही गाँवों और नगरों में देशभक्ति और आर्यसमाज का संदेश फैलाने निकल पड़े, दोनों के विचार और ध्येय एक ही थे वैदिक धर्म द्वारा जन जागृति का उल्लास भरना। तदनन्तर माँ के आचार्य जी पूज्य मेधाव्रताचार्य जी के आदेश पर कि गृहस्थ धर्म का पालन भी अत्यावश्यक है, वे नवसारी में स्थायी रूप से रहने लगे। वहाँ उन्होंने वैदिक मुद्रणालय प्रारम्भ किया। ज्ञान पुष्प माला के 32 पुष्प पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये। तरणि नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। प्रभात नामक दैनिक-पत्र भी निकाला था। उनका घर और मुद्रणालय साथ में ही थे अतः विद्वानों, अतिथियों और अनेक कार्यकर्ताओं से घर भरा रहता था। सभी का अतिशय-सत्कार वे प्रेमभाव से किया करते थे। इनकी लिखी पुस्तकें विदेशों में भी पढ़ाई जाती थीं। अनेक गतिविधियों के साथ भी पिताजी के आग्रह पर मां ने संस्कृत में काव्यतीर्थ की परीक्षा दी और प्रथम स्थान प्राप्त किया। 6 वर्ष का पुत्र, 4 वर्ष और 14 मास की दो पुत्रियों और सर्व गुणसम्पन्न अर्धांगिनी के साथ सभी कार्य सुचारु रूप से चल रहे थे किन्तु नियति कुछ और ही सोच रही थी। प्रेस का काम करते हुए जरा सी चोट लगी और तीन दिन के अल्प ज्वर में 4 फरवरी 1941 के कालिमायुक्त दिन वह धीरोदात्त नायक सा सुदर्शन व्यक्तित्व जिसने कभी सिर में पीड़ा की शिकायत भी नहीं की थी आर्यसमाज और ओ३म् का गान करता हुआ नियति के साथ सहर्ष चल दिया, शेष रहा ओंकार के नाद के साथ गूँजता हुआ स्वजनों आत्मीयजनों का आर्तनाद। बड़े-बड़े डॉक्टर और नेताओं विद्वानों ने ऐसी अद्वितीय आत्मा का परमात्मा की ओर अद्भुत प्रयाण कभी नहीं देखा था।

सभी हतप्रभ थे, पूज्य पिताजी के क्रान्तिकारी जोशीले भाषणों के कारण पू. बापू व वरिष्ठ नेताओं

को शंका हुई कि किसी ने हत्या तो नहीं कर दी? अल्पायु में दिवंगत महान् पुरुष के प्रति श्रद्धा-सुमन के पत्र तथा श्रद्धेय **स्वामी स्वतन्त्रानन्द** जी, **श्री चांदकरण** जी शारदा, **श्री धुरेन्द्र** जी शास्त्री आदि अनेक तत्कालीन गुरुकुलों के आचार्य, गुजरात, सौराष्ट्र की जनता के आश्वासन पत्र एक 29 वर्षीया सुन्दर विदुषी पत्नी, पति के साथ निरन्तर कर्म करती हुई तीन छोटे बच्चों की मां के पास आते रहे। अन्तिम बार पति के प्रति प्रशस्तिपत्र, आश्वस्तिपत्रों का अंक प्रेस में छापकर प्रेस बन्द कर दिया। उसे बेच कर कुछ समय हाथरस गुरुकुल में रहीं।

श्रीमती बिड़ला (**श्री जी.डी. बिड़ला** जी की पत्नी) आर्यसमाजी विचारों की थीं और मां के भाषणों से प्रभावित थीं। ईश्वर भी कदाचित् असह्य कष्ट देकर उसी की परीक्षा लेता है जिसे वह इस योग्य समझता है और जब वह उसमें साहस पाता है तो उसकी सहायता के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ भी बनाता जाता है। **श्रीमती बिड़ला** भी मां के लिये मां का रूप लेकर आईं थीं। वे मां की योग्यता को देखकर उनको मुम्बई लेकर आईं। यहाँ आकर प्रेस बेच कर जो राशि मिली थी उससे दो फ्लैट खरीदे। एक किराए पर दे दिया और दूसरे में हम रहने लगे। मां ने तीनों बच्चों का उत्तरदायित्व सम्भालते हुए बिड़ला पब्लिक स्कूल में कार्य किया, ट्यूशन भी कई कीं, हमें भी अच्छे स्कूलों में पढ़ाया, जहाँ स्वयं पढ़ाती थीं वहाँ हमारी स्वाभिमानी मां ने हमें इसलिये नहीं पढ़ाया कि हम बड़े होकर यह न कहें कि हम मुफ्त में ही पढ़े। समय-समय पर आर्यसमाज की गतिविधियों में भी सक्रिय रहीं। कभी हिन्दी रक्षा आन्दोलन, कभी गोरक्षा आन्दोलन में और भी जब-जब भारत के किसी भी कोने से आर्यसमाज का निमन्त्रण मिला अवश्य अपना योगदान देती रहीं। हम तीनों की शिक्षा, विवाह और पुत्र का व्यापार सभी सुचारु रूप से चलने पर अध्यापन कार्य से निवृत्त होकर मुम्बई के संभ्रान्त सम्पन्न परिवारों की बहू-बेटियों को ससम्मान गीता, उपनिषद् पढ़ाती रहीं। प्रतिदिन हवन करना, सम्पूर्ण गीता या यजुर्वेद, उपनिषद् दर्शन का स्वाध्याय करना, प्रातः तथा रात्रि को दूध और च्यवनप्राश, दिन में एक समय भोजन, अनावश्यक रूप से कपड़े हों या कोई भी वस्तु उनका संग्रह कभी नहीं किया। सादा जीवन उच्च विचार के साथ सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। यही कारण था कि उन्हें कभी किसी भी प्रकार का रोग नहीं हुआ, सदा स्वस्थ रहीं स्वाभिमान के साथ रहीं और **अदीनाः स्याम शरदः शतम्** की उक्ति को सार्थक किया। वे कहा करती थीं वेदों में लिखा है कि 75 वर्ष तक युवावस्था रहती है ओर इसे सत्य साबित करते हुए 80/82 वर्ष तक भी कई सामाजिक कार्य करते हुए **श्री राजीव दीक्षित** जी के स्वाधीनता अभियान में बराबर का साथ दिया। जब तक शक्ति थी अध्ययन-अध्यापन द्वारा सम्मान के साथ पर्याप्त उपार्जन किया और जब शक्ति कुछ घटने लगी तो हैदराबाद सत्याग्रह के सातवें सर्वाधिकारी स्वतन्त्रता सेनानी के रूप मरणोपरान्त सरकार की ओर से उन्हें सम्मान-निधि मिलने लगी अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से या

(शेष पृष्ठ 27 पर)

वैदिक संस्कार-संस्कृत शिक्षण शिविर

आगामी 17 जून से 23 जून तक पाणिनि कन्या महाविद्यालय में आवासीय वैदिक संस्कार-संस्कृत शिक्षण शिविर आयोजित है। जिसमें 5 वर्ष से लेकर 50 वर्ष तक के कोई भी भाई-बहिन भाग ले सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास में प्रवेश

आप अपनी बड़ी हो रही बेटियों बहिनों को वैदिक संस्कार देने के उन्हें संस्कृति से सुवासित करने के लिये स्वेच्छा से वर्ष में कभी भी 15 दिन महीने के लिये भेज सकते हैं। यहाँ छात्रावास में रहकर कन्यायें बाहर का कोर्स भी कर सकती हैं। तथा इसके प्रति अपना शैक्षिक-आर्थिक योगदान व जीवनदान भी कर सकती हैं। विशेष जानकारी के लिये इन नम्बरों पर सम्पर्क करें:–

09235604340, 08924899440, 09450081978

निवेदिका–
आचार्या नन्दिता शास्त्री

वेदपाठ शाला का निर्माण

अपने महाविद्यालय में पाठशाला (क्लॉस रूम) की कमी को देखते हुए वेद-पाठशाला का निर्माण आरम्भ हो गया है। आप विद्यालय के हितैषी सहयोगी दानी महाजनों से निवेदन है कि अपनी कमाई से ढाई लाख रु. का योगदान देकर एक कमरे में पत्थर पर अपना नामांकन करवाकर अपने परिवार की स्मृति को सुरक्षित करा सकते हैं।

सहयोग हेतु–

यह संस्था आप सबके सहयोग से चलती है। आप अपना किसी भी प्रकार का योगदान 'पाणिनि कन्या महाविद्यालय' के **H.D.F.C. बैंक के खाता नं.** 02207620000015 में भेज सकते हैं। आपका सहयोग हमारे लिये बहुमूल्य है। **यह संस्था 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।**

कन्याओं के लिये सुनहरा अवसर

10वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्राओं के लिये सरकार द्वारा अनुमोदित विशेष प्रशिक्षण कोर्स आई.टी.आई. की कक्षायें इस वर्ष नये सत्र से अपने महाविद्यालय में आरम्भ हो रही हैं।

प्रवेश की इच्छुक कन्यायें यथाशीघ्र सम्पर्क कर सकती हैं।

स्थानः– **पाणिनि कन्या महाविद्यालय**, तुलसीपुर,
महमूरगंज, वाराणसी- 10

सम्पर्क नं.:– 09235604340, 08924899440, 09450081978

विश्व को आर्यों की देन

– स्वामी शिवानन्द सरस्वती

चिकित्सा पद्धति–

[सर्जरी विद्या भारत की देन है। एक बार हैदर अली ने अंग्रेज सेनापति कर्नल कूट को पकड़ लिया और दण्डस्वरूप उसकी नाक काट दी। जिसे भारत के वैद्य ने यथावत् जोड़ दी। आगे पढ़ें– **सम्पा०**]

इंग्लैंड में जाकर कर्नल कूट एक दिन संसद में गया और वहाँ उपस्थित सभी सांसदों को सम्बोधित करके कहा कि ईमानदारी से बताओ कि मेरी नाक जैसी पहले थी अब भी आपको वैसी ही लग रही है? सभी ने कहा कि जैसी पहले थी नाक तो वैसी ही है, परन्तु आपने क्यों पूछा? तब कर्नल कूट ने पूरी घटना बता दी। इस बात को सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये कि ऐसी कौन-सी दवा है जिससे कटा हुआ अंग ज्यों का त्यों जोड़ दिया जाता है। जब यह बात वहाँ सभी लोगों में फैल गई तो कुछ जिज्ञासु लोगों ने कहा कि हम उस वैद्य से मिलना चाहते हैं। तब कर्नल कूट अनेक लोगों को लेकर भारतवर्ष आया और बेलगाम में वैद्य जी से मिलाया। उन्होंने वैद्य जी से पूछा कि यह विद्या भारत में कहाँ पढ़ाई जाती है? वैद्य जी ने कहा कि भारतवर्ष के प्रत्येक गुरुकुल में यह विद्या पढ़ाई जाती है। तब उन सब ने गुरुकुलों में प्रवेश लेने की इच्छा व्यक्त की और वैद्य जी ने उन्हें गुरुकुलों में प्रवेश दिलाया। उन लोगों का जो मुखिया था उसने वैद्य जी से निवेदन किया कि मैं किसी गुरुकुल में न जाकर आप की छत्र छाया में रहकर आपकी यह विद्या सीखना चाहूँ, तो क्या आप मुझ पर यह कृपा करेंगे? इस पर वैद्य जी ने कहा कि आप की ऐसी इच्छा है तो यहाँ रहकर भी सीख सकते हैं इस व्यक्ति ने तीन वर्ष तक बेलगाम में वैद्य जी के पास रहकर यह विद्या सीखी। और भी चिकित्सा सम्बन्धी कई विद्यायें इसने सीखीं और वैद्य जी को अपना गुरु मानकर गुरु दक्षिणा दी। इस व्यक्ति का नाम था **थामस क्रूसो**। उसने अपनी डायरी में लिखा है कि एक दिन एक मराठा सैनिक वैद्य जी के पास आया जिसका एक हाथ कट गया था वह कटे हुये हाथ को दिखाकर बोला कि आपकी महान् कृपा होगी यदि आप मेरे कटे हुये हाथ को जोड़ दें देश के लिये लड़ते-लड़ते मेरा यह हाथ कटा है। उस दिन वैद्य जी ने उसके हाथ को जोड़ने की पूरी प्रक्रिया मेरे द्वारा कराई। वह व्यक्ति तीन दिन रहा और तीनों दिन वैद्य जी के बताये अनुसार उसकी चिकित्सा मैंने की और उसका हाथ जुड़ गया था। वह एक बात लिखता है जो बड़ी महत्वपूर्ण है। वह लिखता है कि इस अनोखी विद्या को सिखाने के बदले में उन्होंने मुझसे कुछ लिया नहीं, और जब मैंने कुछ देना चाहा तो उन्होंने कहा कि विद्या बेचने की

वस्तु नहीं है।

उन लोगों को यह बात भली प्रकार याद रखनी चाहिये जो कहते हैं कि सर्जरी करना हमने यूरोप वालों से सीखा।

जिस समय अमेरिका और यूरोप में लाखों लोग चेचक से मर रहे थे, अन्धे और कुरूप हो रहे थे उस समय भारत में एक टीके से चेचक ठीक कर ली जाती थी। एक अंग्रेज स्वयं लिखता है कि मैं कलकत्ता में चेचक का इलाज सीखकर आया था और मैंने जब उस औषधि का प्रयोग भारतीय वैद्यों के बताये अनुसार किया तो एक भी रोगी ऐसा देखने में नहीं आया, जो ठीक न हो गया हो, किसी ने औषध सेवन करने में लापरवाही की हो तो उसकी बात अलग है उस व्यक्ति का नाम था **डॉ. ओलीवर**।

यदि हम आज से तेरह सौ वर्ष पुराना इतिहास पढ़ते हैं, तो उसमें भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जब कि जीभ जैसे कोमल अंगों को भी केवल औषधि का लेपन करने से जोड़ दिया जाता था। सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम का हमला भारत पर हुआ उस समय सिंध के राजा दाहर थे, कुछ विश्वासघातियों के कारण राजा दाहर की पराजय हुई। दाहर की तीन पत्नियाँ थीं, एक तो बूढ़ी हो गई थी, दूसरी रणक्षेत्र में लड़ते-लड़ते अमर हो गई थी तीसरी पत्नी जो युवती थी उसे और उसके साथ दाहर की दो बेटी सूर्या और परमाल को पकड़कर ले गये थे। बहुत सा धन माल ले गये इसके साथ ही वे यहाँ के कुछ कुशल कारीगरों को और चिकित्सकों को भी ले गये वे चाहते थे कि जो गुणवान् लोग हैं, उन्हें अपने देश में गुलाम बनाकर ले जायें और उनसे मनमाना काम लिया जाये। वहाँ दाहर की दोनों बेटियों को मार दिया गया था परन्तु पत्नी को अब्दुल्ला नाम के एक सेनापति को दे दिया गया था और वह उसकी पत्नी बन गई थी अब्दुल्ला ने उन गुणवान् लोगों में देखा कि एक वैद्य हैं जो बहुत ही कुशल जान पड़ते हैं उस समय अब्दुल्ला की पहली पत्नी से एक लड़की थी, जिसकी आयु लगभग 16 वर्ष थी वह अत्यन्त सुन्दरी थी। वह लड़की किसी भयंकर रोग के शिकंजे में फंस गई थी। अब्दुल्ला की वह एकमात्र संतान थी, इसलिये वह उसे अत्यन्त प्रिय थी अब्दुल्ला उस बूढ़े वैद्य को अपने महल में ले गया और अपनी लड़की की स्थिति बतायी, वैद्य जी ने कहा कि मैं इसे बिल्कुल स्वस्थ कर दूँगा। वैद्य जी की चिकित्सा से वह लड़की पूर्ण स्वस्थ हो गई, इस लड़की का नाम इतिहास में मइयाह लिखा है। अब्दुल्ला ने प्रसन्न होकर कहा कि आप अपने हिन्दू रीति-रिवाज का पालन कर सकते हैं, जिस प्रकार की पूजा पाठ आप हिन्दुस्तान में करते थे उसे ही यहाँ भी कीजिये इस्लाम के सिद्धान्तों को आप पर जबरन नहीं थोपा जायेगा। और यह भी अच्छा होगा कि आप मेरी बेटी को हिन्दुस्तानी जुबान में कुछ लिखना-पढ़ना सिखा दें। वैद्य जी ने स्वीकार किया और उस लड़की को पढ़ाने लगे। महल के एक कोने में वैद्य जी को एक कमरा दिया हुआ था उसी में समय पर उनकी आवश्यक वस्तुएं पहुँचती रहती थीं। दाहर की पत्नी अब अब्दुल्ला

की पत्नी बनकर उसी महल में रहती थी, और वहाँ की भोग-विलास की जिन्दगी में पिछले दिनों को भूल चुकी थी, आर्यों की मर्यादाओं को भूल चुकी थी। एक दिन वह महल में घूमती हुई उधर से जा रही थी, जिधर वैद्य जी रहते थे। वैद्य जी ने उसे देखा तो अपने आपको रोक न सके, और जोर से चिल्ला कर कहा– ओ महाराजा दाहर की रानी! अपने देश की भाषा में किसी व्यक्ति की आवाज सुनकर वह रुक गई और लज्जित एवं बेचैन सी होकर उसी ओर देखने लगी जिधर से आवाज आई थी। उस बूढ़े की आँखों से अंगार झड़ रहे थे, उस महिला को देखकर बोला– कुलटा, कलंकिनी, चांडालिनी, क्या तेरी अंगूठी में कोई विष का टुकड़ा नहीं था जिसे चाटकर मर जाती? क्या दो हाथ लम्बी रस्सी तुझे नहीं मिली जिसे गले में डालकर फाँसी लगाकर मर जाती? क्या यह महल इतना ऊँचा नहीं है, जिसकी छत से कूदकर मर जाती? ओ दुराचारिणी! तूने उस व्यक्ति को अपना पति मान लिया जिसने सारे सिंध को जलाकर भस्म कर दिया। भगवान ने तेरी कोख को इसलिये बनाया था कि इसमें कोई आर्य बच्चा पले, और तू इसमें यवन बच्चे को पालना चाहती है। तू अपने पेट से साँप और भेड़िये को जन्म देना चाहती है जो तेरी जाति को बार-बार डसेंगे और खायेंगे।

धिक्कार और तिरस्कार के धक्के से उस महिला की टांग काँपने लगी और वह बेहोश होकर धरती पर गिर पड़ी। परन्तु वैद्य उसी तरह से गरजता रहा, तू घोर नरक की आग में भी पापों के काले धब्बों को साफ नहीं कर सकती। पास के ही एक कमरे में अब्दुल्ला नमाज पड़ रहा था। वैद्य की आवाज उसके कानों में भी पड़ चुकी थी, उसकी नमाज पूरी हुई या न हुई यह तो भगवान जाने। वह एकदम बाहर आया और लाल आँखें करके वैद्य जी को जितने भी अपशब्द वह कह सकता था वे कहे, और फिर तलवार लेकर कहा कि तेरी जीभ काटूँगा, जिससे आइन्दा किसी स्त्री को ऐसे शब्द न कह सके। काफिर! अपनी जीभ निकाल, बूढ़े वैद्य ने अपनी जीभ बाहर निकाल दी, अब्दुल्ला ने अपने एक हाथ से जीभ को खीचकर पकड़ा और दूसरे हाथ से तलवार की नोक से जीभ काट ली। जीभ का वह नन्हा सा टुकड़ा उसने एक ओर फेंक दिया। अब तक भी वैद्य जी के चेहरे पर घबराहट का नामो निशान नहीं था। बस गर्म खून की कुछ बूँदें उसकी सफेद दाढ़ी पर गिर पड़ी थीं। बूढ़ा वैद्य आकाश की ओर मुँह करके किसी निराकार शक्ति का ध्यान कर रहा था। इस घटना का पता मइयाह को लग गया था जो उस वैद्य की शिष्या थी। अब्दुल्ला के वहाँ से चले जाने पर वैद्य ने घड़े में से एक लोटा पानी लिया, यह लोटा हिन्दुस्तानी ढंग का था, हिन्दुस्तानी वैद्य एक ओर बैठकर दाढ़ी को साफ करने लगा। उसी समय मइयाह वहाँ आ गयी और अपने गुरु की हालत देखकर वह रो पड़ी, वैद्य जी उस बच्ची को अपनी पुत्री के समान पढ़ाते और प्यार करते थे। हिन्दुस्तानी वैद्य ने लकड़ी का कोयला उठाया और फर्श पर लिख दिया कि बेटी रो मत, मैं इसे ठीक

कर लूँगा। मइयाह ने कहा कि गुरु जी आप इस जीभ के कटे हुये टुकड़े को कैसे जोड़ सकते हैं? वैद्य जी ने फिर कोयला उठाया और फर्श पर लिखा– मेरी प्यारी बच्ची! हिन्दुस्तान के गुणज्ञ चिकित्सक और कुशल शल्य चिकित्सक जिन के पांव की धूल भी मैं नहीं हूँ, गर्दन के अलावा प्रत्येक अंग को जोड़ देते हैं इस जीभ को तो मैं अभी जोड़ लूँगा। वैद्य जी ने एक पोटली खोलकर सामने रख लिया और मांस के टुकड़े को बायें हाथ की दो अंगुलियों में थाम कर दायें हाथ की हथेली पर तीन प्रकार की औषधियाँ डालीं और ये ही औषधियाँ जीभ के कटे हुये टुकड़े पर डाली। मांस का वह निष्प्राण सिमटा हुआ सिकुड़ा सा टुकड़ा अचानक फूल गया, उसमें जीवित मांस का सा रंग पैदा हो गया। उसमें से रक्त जैसा गाढ़ा द्रव्य बाहर गिरने लगा। फिर वैद्य जी ने अपने बायें हाथ में दर्पण लिया और दूसरे हाथ से वह जीभ का कटा हुआ टुकड़ा बड़ी सावधानी से जीभ से जोड़ दिया, मइयाह इस दृश्य को बड़ी उत्सुकता से देख रही थी। उसने देखा कि जीभ ऐसे जुड़ गई जैसे लोहा और चुम्बक जुड़ जाते हैं वैद्य जी ने फिर एक कोयला उठाया और लिखा– बेटी अब तुम जाओ कल सबेरे तक यह वैसे ही जुड़ जायेगी जैसी कटने से पहले थी। मइयाह उस समय चली तो गई परन्तु रात भर सोचती रही कि कब सुबह हो और कब अपने गुरु की जीभ को जुड़ा हुआ देखूँ। अगले दिन मइयाह कुछ देर से उठी क्योंकि आधी रात से अधिक तो सोचते-सोचते ही बीत गई थी। रात्रि के अन्तिम प्रहर में नींद आई थी। फिर भी वह आँखें खुलते ही गुरुजी के पास दौड़ी हुई गई। मइयाह को देखते ही वैद्य जी बोले– देखो! मेरी प्यारी बच्ची देखो! मेरी जीभ बिल्कुल ठीक हो गई है। मइयाह देखकर खुशी से उछल पड़ी। वैद्य जी बोले बेटी! यह है हमारे देश की चिकित्सा, जिसकी बराबरी विश्व का कोई देश नहीं कर सकता। ◆

(पृष्ठ 22 का शेष)

आर्थिक दृष्टि से सदा सक्षम रहीं मानों उनके सहचर सशरीर नहीं लेकिन आर्थिक रूप से सम्बल बनकर सदा उनके साथ रहे हैं।

शायद पिता का अल्प सुख मिला था इसलिये ईश्वर ने उन्हें दीर्घायु देकर हमें तृप्त करना चाहा था किन्तु 17 नवम्बर 2014 सोमवार को दिन के ग्यारह बजे के बाद सुप्तावस्था में ही क्षीण होते जा रहे नश्वर देह को त्याग कर नवीन स्वस्थ सुन्दर तन पाने के लिये मां की आत्मा परम आत्मा में विलीन हो गई। पल भर में ही कभी न लौट कर आने के लिये वे कहीं दूर चली गईं–

मां! तुमने दिया सदा अतिरिक्त स्नेहिल पोषण,
मां! तुमने दिया सदा हमें ज्ञान आध्यात्मिक,
मां! तुम तो स्मृतियों का आकाश बन गईं,
मां, कहने पर अब कौन कहेगा, हां-बोलो बेटा?....

◆

स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

गतांक से आगे–

– आशा रानी व्होरा

क्रान्ति की वीरांगना
बेगम जीनत महल

दिल्ली के अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर इस स्वतंत्रता संग्राम के एक क्रान्तिकारी सैनिक थे। पर मेरठ से कूच करके जब विद्रोही दिल्ली पहुँचे और उन्होंने बहादुरशाह के द्वार पर जाकर अलख जगाई, तो बहादुरशाह एकदम ही तैयार नहीं हो गये थे। उस समय उनके दरबार में विश्वासघाती अहलकारों का जमघट था, जो उन्हें अंग्रेजों की ताकत से टक्कर लेने के लिए मना कर रहे थे। बहादुरशाह स्वयं भी वृद्धावस्था और मुगल शासन की घटती ताकत के कारण शरीर-मन से शिथिल हो चुके थे। इसलिए प्रायः शेरोशायरी में डूबे रहते थे। अंग्रेजों की लूट से खजाना भी लगभग खाली हो चुका था। उन्होंने सैनिकों के आगे अपनी विवशता रखी। सैनिकों ने कहा, "आप घबराइए नहीं। अंग्रेजों ने हमारा ही धन लूटकर जो अपने खजाने भर रखे हैं, उन्हें लूटकर हम क्रान्ति युद्ध के लिए धन आपको ला देंगे। आप केवल हमारा उत्साह बढ़ाइए और हमारा नेतृत्व संभालिए।" तब तक अवध से, बिठूर से भी सैनिक वहाँ पहुँच गये थे।

बादशाह फिर भी हिचकिचा रहे थे। तभी परदे के पीछे से उनकी बेगम जीनत महल बोल उठीं, "यह समय गजलें कहकर दिल बहलाने का नहीं है। बिठूर से नाना साहब का पैगाम लेकर देशभक्त सैनिक आए हैं। आज सारे हिन्दुस्तान की आँखें दिल्ली की ओर आप पर लगी हैं। खानद-न-ए मुगलिया का खून हिन्द को गुलाम होने देगा, तो इतिहास उसे क्षमा नहीं करेगा।

जीनत महल की इस प्रेरणा से बहादुरशाह की सोयी बूढ़ी रगों में नया खून जाग उठा। तुरन्त बोले, "फिरंगियों ने इतने जुल्म ढाए हैं कि हर तरफ कोहराम मचा हुआ है। देश की निगाहें दिल्ली की ओर लगी हैं, तो हम लड़ेंगे, बेगम जरूर लड़ेंगे, आगे जो हमारी और मुल्क की किस्मत। हाँ, जो भी हो, मंजूरे खुदा, पर हम कसम खाते हैं कि गुलामी की मौत नहीं मरेंगे। तब तुम्हें भी तकलीफें उठाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

जिस बेगम ने बादशाह को यह प्रेरणा दी, वह भला कैसे पीछे हट सकती थी। लड़ाई लड़ी गयी किले से लेकर दिल्ली की सड़कों तक। विद्रोही सैनिक जी-जान से लड़े। पर सितम्बर में पासा पलट गया। अंग्रेजी सेना ने लाल किले पर घेरा डाल दिया। बहादुरशाह घिर गये बेगम जीनत महल व अन्य स्त्रियों को किसी अज्ञात स्थान पर भेज, वह स्वयं 19 सितम्बर की उस रात किले में अकेले रह गये। मुगल सन्तनत का चिराग गुल होते देख सुबह मुँह अंधेरे ही उन्होंने किला छोड़ दिया।

पर सुरक्षित निकल जाने से पूर्व हुमायूँ के मकबरे से बेगम जीनत महल के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। दोनों पर देशद्रोह का अभियोग लगाया गया और उन्हें वापस लाकर लाल किले में नजरबंद कर दिया गया। दिल्ली में विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व उनके दोनों लड़के कर रहे थे। उनके सिर काटकर, रेशमी रुमाल से ढके एक थाल में रखकर, लाल किले में बंदी बूढ़े बाप को यह तोहफा पेश किया गया। बेटों के कटे सिर देखकर वृद्ध बहादुरशाह पर क्या बीती होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। बेगम जीनत महल ने सुना, तो धक्क रह गईं। पर जैसे वह जानती थी, जंगे-आजादी की कीमत तो चुकानी ही पड़ेगी, इसलिए अधिक विचलित नहीं हुई। आखिर उन्हीं की प्रेरणा से तो यह जंग लड़ी गयी थी। अस्सी वर्षीय बूढ़े बहादुरशाह जफर पर 27 जनवरी 1858 को मुकदमा चलाया गया। 42 दिन बाद ही किए गये एक फैसले के अनुसार, उन्हें आजीवन कैद की सजा देकर रंगून-जेल भिजवा दिया गया। वहीं 7 नवम्बर 1862 को पक्षाघात से उनकी मृत्यु हुई।

कैप्टन एच.एन. डेविस ने लिखा है, मलिका जीनत महल अच्छी सेहत और अच्छी सूरत-शक्ल वाली एक मध्यम श्रेणी की महिला थीं। परदे के पीछे बैठकर वह बादशाह को सलाह मशविरा दिया करती थीं। बेगम के मन में राष्ट्र हित और अपने युद्धरत सैनिकों के साथ स्नेह-संवेदन का भाव ही सर्वोपरि था। एक ओर वह राष्ट्र चिन्तन में डूब योजनाएँ बनाती थीं, दूसरी ओर अपने सिपाहियों के लिए हर सुख-सुविधा का प्रबन्ध करती थीं- निजी कोष से धन खर्च करके भी। हार जाने के बाद इसी लिए उनका अधिकांश निजी कोष भी खाली हो गया था। दिल्ली के पतन के बाद ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें तरह-तरह से परेशान किया। उनकी सम्पत्ति या तो लूट ली गई या जब्त कर ली गई। अंग्रेजों की नजर में वह बहादुर शाह से कम अपराधिनी न थीं शायद इसीलिए वे उनके साथ अमानवीय ढंग से पेश आए।

विश्वासघातियों की देशद्रोही चालों के कारण बहादुरशाह जफर स्वतंत्रता के इस प्रथम युद्ध में अधिक सक्रिय नहीं हो सके, वह जल्दी ही गिरफ्तार कर लिए गये, पर उनकी बेगम जीनत महल की प्रेरणा उन्हें आजादी के इतिहास में अमर बना गयी- स्वयं जीनत महल को भी।

अवंतिकाबाई लोधी

मध्यप्रदेश के मांडला जिले में दिंदरी तहसील के अन्तर्गत एक छोटा-सा कस्बा है, रामगढ़। उस समय रामगढ़ एक छोटी रियासत थी। इस छोटी-सी रियासत के अंतिम शासक राजा लक्ष्मण सिंह की 1850 में मृत्यु हो चुकी थी। उनका पुत्र विक्रमजीत सिंह उत्तराधिकारी था। पर मानसिक रोगी हो जाने के कारण वह बहुत थोड़े दिन ही शासन कर सका। अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति छोटे-मोटे राज्यों को हड़पने के लिए ऐसे बहानों की तलाश में रहती थी। अधिकारियों ने राज्य-परिवार को पेंशन देकर वहाँ अपनी ओर से एक तहसीलदार की नियुक्ति कर दी। रामगढ़ की अवंतिकाबाई ने इसका बहुत विरोध किया, पर व्यर्थ।

1857 की क्रान्ति का बिगुल बजने पर उन्हें बदला लेने का अवसर मिल गया। जुलाई 1857 में रानी विद्रोह में उठ खड़ी हुई। उन्होंने तहसीलदार को बरखास्त कर राज्य की बागडोर स्वयं अपने हाथ में ले ली। जबलपुर के कमिश्नर को पता चला, तो उसने 26 अगस्त को रानी को पत्र लिखकर उन्हें मांडला के डिप्टी कलेक्टर से मिलने का आदेश दिया, जिसकी रानी ने अवहेलना कर दी। वे डरीं या झुकी नहीं। युद्ध की तैयारियाँ करने लगीं। सेना-संगठन को मजबूत किया, किलेबंदी की। समीप के राजाओं और जमीदारों को सहायता के लिए आमंत्रित किया।

इन गतिविधियों की खबर सुनकर 1 अप्रैल 1858 को ब्रिटिश सेना ने रामगढ़ की ओर कूच किया। किले को घेर लिया गया। रानी को आत्मसमर्पण के लिए संदेश भेजे गए। लालच व धमकियाँ दी गयीं। पर उत्तर में रानी किले से बाहर निकलकर युद्ध-मैदान में आ डटीं। सेना का नेतृत्व स्वयं उनके हाथ में था। उनकी ललकार व युद्ध-क्षमता देखकर अंग्रेज दंग रह गए। अंग्रेजों को काफी हानि भी उठानी पड़ी। अंग्रेज सेना को पीछे लौटना पड़ा। कप्तान वाशिंगटन ने दूसरी बार पहले से अधिक सेना लेकर आक्रमण किया। इस बार भी रानी खूब बहादुरी से लड़ी। स्वयं घोड़े पर चढ़कर अपनी सेना की कमान सम्भाल रही थीं। हजारों की संख्या में ब्रिटिश सैनिक मारे गये, शेष मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। इस भगदड़ में वाशिंगटन का लड़का भी खो गया, जिसे रानी ने बाद में खोजकर उदारतापूर्वक दूत के साथ लौटा दिया। पर रानी के इस अहसान का बदला वाशिंगटन ने तीसरी बार विशाल सेना के साथ आक्रमण करके चुकाया। पर बहादुरी से लड़ने के बावजूद इस बार रानी की हार निश्चित हो गयी। कहाँ विशाल अंग्रेजी फौज की संगठित व यांत्रिक ताकत और कहाँ उनकी छोटी-सी सेना का आत्म-बल। जान-माल की भारी हानि और हार सामने देखकर भी वह और उनके सैनिक अंत तक लड़े। फिर रानी अपने बचे सैनिकों के साथ जंगल में जा छिपीं। वहीं से फिर ब्रिटिश फौज के ठिकानों पर उन्होंने छापामार हमले शुरू कर दिये।

रानी को आशा थी कि रीवाँ राज्य के क्रान्तिकारी सैनिकों की मदद पहुँच जाने पर वह अपना रामगढ़ वापस ले लेंगी। पर वे लोग समय पर अंग्रेजों से मिल गए और युद्ध में रानी की स्थिति खराब हो गयी। ज़ब उनका अंग्रेजों की गिरफ्त में आना निश्चित हो गया, तो सामने आसन्न संकट देख, उन्होंने अपने एक सरदार से तलवार मांगी और तुरन्त उसे अपनी छाती में घुसेड़ लिया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों के लिए एक संदेश छोड़ा, ''इस विद्रोह के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ। मैंने ही सैनिकों को भड़काकर युद्ध के लिए तैयार किया, वे स्वयं विद्रोही नहीं बने।'' रानी के सैनिकों को अंग्रेजों द्वारा भयंकर यातनाएँ न दी जाएं, इस संदेश के पीछे उनकी यही मंशा थी।

ईमानदारी, निष्ठा और देशभक्ति के लिए बलिदान होने वाली रामगढ़ की इस बहादुर रानी की यह वीर-गाथा भी रानी लक्ष्मीबाई की शौर्य-परम्परा की एक कड़ी है। ◆

हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र

गतांक से आगे –

– आचार्य हरिहर पाण्डेय

कलिवर्ज्य प्रकरण

वर्तमान ज्योतिष के अनुसार अशुभ नक्षत्रादि काल शुभ कर्मों में वर्जित हैं और चोरी, डाका, व्यभिचार, हत्या, विष-दान आदि पाप कर्मों में उपयुक्त हैं। मुहूर्तचिन्तामणि में रामाचार्य ने और उसकी पीयूषधारा टीका में वसिष्ठ ने कहा है कि अशुभ कालों में घात करने, आग लगाने, विष देने, फूट डालने आदि कर्मों में सफलता मिलती है। इस सिद्धान्त के अनुसार कलियुग में विवाह, गृहारम्भ, विद्याभ्यास आदि शुभ कर्म नहीं करना चाहिए और पाप कर्म करना चाहिए। धर्मशास्त्र ने भी कलि में कुछ कर्मों का निषेध किया है। उनमें से कुछ ये हैं–

परपुरुष से सन्तानोत्पादन (नियोग), श्राद्ध में माँस मदिरा का प्रयोग, संन्यास, देवर से सन्तानोत्पादन, विधवाविवाह, अक्षतयोनि विवाहिता का पुनर्विवाह, निम्न जाति की कन्या से विवाह, स्त्रीस्वातन्त्र्य, बलात्कार से अपवित्र स्त्रियों की शुद्धि, अतिथि सत्कार में बछियावध, पशुयाग, अश्वमेध, नरमेध, गोसव यज्ञ में गोवध, सौत्रामणि यज्ञ में सुरापान, शूलगव यज्ञ में बैलवध, ब्राह्मण को मृत्युदण्ड, लम्बा ब्रह्मचर्य, आत्महत्या, दूरस्थ तीर्थों की यात्रा, मुख से आग फूँकना, शूद्र से भोजन बनवाना आदि।

परन्तु सत्य यह है कि पाप कर्म प्रत्येक युग में पाप ही होता है। कृतयुग और त्रेता में यज्ञों में पशुओं की, साँस बन्द कर गला घोंट कर हत्या की जाती थी। हत्यारा शामित्र कहा जाता था और वह ब्राह्मण तथा अब्राह्मण दोनों होता था। तो क्या उस समय यह कर्म शुभ था? क्या बछियावध, बैलवध, माँस-मदिरा-सेवन, नरमेध और आत्महत्या आदि कर्म किसी युग में वैध हो सकते हैं? बलात्कार से अपवित्र नारियों की शुद्धि और विधवा विवाहादि कर्म कृतयुग में उचित थे तो आज अवैध क्यों?

वेदांग ज्योतिष का युग

इसमें पाँच संवत्सरों के एक युग का वर्णन है पर न युग अशुभ है न कोई संवत्। यह युग मध्यम है। इसका आरम्भ उत्तरायण से, माघ से और धनिष्ठा से होता था। इसमें 60 सौरमास, 62 चान्द्रमास, 2 अधिमास, 67 नाक्षत्रमास, 1830 सावन दिन, 1960 तिथियाँ, 30 तिथिक्षय और 1809 नक्षत्र होते थे।

उत्तरायण के आरम्भ में सूर्य धनिष्ठा में रहता था और दक्षिणायन के आरम्भ में आश्लेषा के मध्य में। उत्तरायण का आरम्भ माघ शुक्ल से और दक्षिणायनारम्भ श्रावणशुक्ल से होता था। अब इसका प्रचलन नहीं है।

संवत्सर और उसका मान

युग से छोटा दूसरा कालमान संवत्सर है। इसे वर्ष कहते हैं वर्ष के अर्थ में वेदों में संवत्सर, समा, शरद्, हेमन्त और हायन शब्दों का प्रयोग है। यजुः संहिता में पाँच संवत्सरों का एक युग है, पाँचों के

पाँच देव स्वामी हैं और उनमें थोड़ा मतभेद है। पर सब देव और पाँचों संवत्सर शुभ हैं। वर्तमान ज्योतिष में आधे से अधिक संवत्सर अशुभ हैं पर वेद में वर्ष (संवत्सर) को महान्, प्रजापति और परम शुभ कहा है। गोपथ ब्राह्मण (पूर्व भाग प्र. 4 क. 11) का कथन है कि संवत्सर अधिदेव और अध्यात्म होकर प्रतिष्ठित है। जो इस बात को जानता है वह प्रजावान् और पशुमान् होकर प्रतिष्ठा पाता है। यह संवत्सर बृहती (वेदवाणी) से मिला है। बृहती के 36 अंग होते हैं। जो यह जानता है वह संवत्सरस्वरूप है। संवत्सर महान् सुपर्ण (गरुड़ पक्षी) है, जिस दिन दिनरात्रि समान होते हैं उसे विषुवदिन कहते हैं। उसके पूर्व के छः मास सुपर्ण के दक्षिण पक्ष हैं और बाद के छः मास वामपक्ष हैं। विषुवान् संवत्सर का आत्मा है और बारह मास उसके शरीर के स्विदित (पसीना) हैं। पुरुष संवत्सर है। उसके दो पाद दिन-रात्रि हैं, नख नक्षत्र हैं और अन्य अंग यज्ञ हैं। पुरुष एक है और संवत्सर एक है अर्थात् संवत्सर पुरुष (परमात्मा) का शरीर है।

स वा एष संवत्सरोऽधिदैवं चाध्यात्मं च प्रतिष्ठितः। य एवं वेद प्रजया पशुभिः प्रतितिष्ठति। स वा एष संवत्सरो बृहतीमभिसम्पन्नः। सा षट्त्रिंशदवदाना। एष महासुपर्णः यान् विषुवतः षण्मासान् पुरस्तादुपैति स तस्य दक्षिणः पक्षः उत्तरोऽन्यः। विषुवान् संवत्सरस्यात्मा। द्वादश-मासाः स्विदितम् (गोपथब्राह्मण 2/5/5)।

तैत्तिरीय ब्राह्मण (3/10/1) में संवत्सर साक्षात् प्रजापति और महान् है– **प्रजापतिः संवत्सरो महान् कः**। गोपथ ब्राह्मण की ही भाँति तैत्तिरीय ब्राह्मण (3/10/4/1) का कथन है कि संवत्सर एक सुपर्ण है और वसन्तादि ऋतुएँ उसके सिर, पुच्छ और दायें-बायें पक्ष हैं। इस विषय के अन्य भी अनेक प्रमाण हैं। अतः वेदमत में संवत्सर का कोई भाग अशुभ नहीं है। प्रश्नोपनिषद् का मन्त्र आगे पढ़ें।

आर्यों का जीवन प्राकृतिक था इसलिए उनके सारे कालमान प्राकृतिक हैं। आर्यों का वर्ष सौर है। सूर्य क्रान्तिवृत्त के किसी बिन्दु से चलकर पुनः जितने समय में वहाँ आता है उसे एक सौर वर्ष कहते हैं। चन्द्रमा उतने समय में 12 बार पूर्ण होता है इसलिए 12 मास माने जाते हैं। सूर्य जहाँ से चलता है उस बिन्दु में भी थोड़ी गति है। वह एक वर्ष में लगभग 50.2 वकला पीछे खिसक जाता है। अतः सूर्य वहाँ 50 पल पूर्व पहुँच जाता है। इसको सायन वर्ष कहते हैं। वेद में राशियाँ नहीं हैं पर वर्ष को 12 सौरमासों, 360 सौर दिवसों और 720 अहोरात्रों में बाँटने का स्पष्ट उल्लेख है।

द्वादशारं न हि तज्जराय सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः (ऋ. 1/164/11)। **द्वादश-प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिः** (ऋ. 1/164/48) तस्य त्रीणि शतानि षष्टिश्च स्तोत्रीयास्तावतीः संवत्सरस्य रात्रयः (तै.सं. 7/5/1)।

आर्य चाहते थे कि 12 चान्द्रमास सर्वदा नियमित ऋतुओं में आते रहें। ऐसा न हो कि चैत्र कभी वर्षा में और कभी जाड़े में आ जाय। इसलिए उन्होंने अधिक मास की व्यवस्था की है। यह मध्यम मान से 32-33 मासों में आता है। इसको वेदों में अंहस्पति, मलिम्लुच और संसर्प आदि तथा वर्तमान ज्योतिष में

अधिमास, मलमास और पुरुषोत्तम मास आदि कहा गया है। वेदों में चान्द्रमासों के अतिरिक्त वर्ष के बारहवें अंश तुल्य सायन सौरमास भी है। मधु माधव आदि नाम उन्हीं के हैं।

वेदांग ज्योतिष में सायन सौरवर्ष और मासादिकों के स्थूल व्यवहारोपयोगी मान लिखे हैं किन्तु उस समय मुनियों को सूक्ष्म मान भी ज्ञात थे। ऋग्वेद में कथित 360 दिन सौर दिन हैं, सायन नहीं। सूर्य सिद्धान्त आदि में लिखे वर्षमान भिन्न-भिन्न हैं पर इनमें डेढ़ पल (आधा मिनट) से अधिक अन्तर नहीं है।

चैत्रादि मास सदा नियमित ऋतुओं में आते रहें, इसलिए दूरदर्शी आर्यों ने अधिकमास की व्यवस्था की पर निरयण वर्ष मानने पर भी दोष आवेगा। हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि इसी कारण वसन्त ऋतु चैत्र से खिसक कर माघ में आ गयी है और आगे सावन में भी आवेगी। अतः वर्ष सायन मानना ही समुचित है।

वर्ष का आरम्भ और बार्हस्पत्य संवत्सर

विश्व की हर जाति में वर्ष के आरम्भदिवस भिन्न-भिन्न हैं। पूरे भारत में हिन्दुओं के वर्षारंभदिवस भी लगभग दस हैं। अधिकांश पंचांगों में वर्षारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, किन्तु प्रत्येक पंचांग के मुखपृष्ठ पर संवत्सर का एक नाम भी लिखा रहता है। उसका सम्बन्ध सौर वर्ष से नहीं बल्कि वृहस्पतिवर्ष से है। बृहस्पति लगभग बारह सौर वर्षों में नक्षत्र मण्डल की एक प्रदक्षिणा करता है इसलिए बारह वर्षों का एक संवत्सरचक्र (युग) माना गया है और एक सौरवर्ष को बृहस्पति का एक मास कहा गया है। इन वर्षों के नाम चैत्रसंवत्सर, वैशाखसंवत्सर आदि हैं। बृहस्पति के अस्त, उदित, वक्री, मार्गी और अस्त होने में 399 दिन लगते हैं। अतः उसकी एक बार की स्थिति के समय में 399 दिन जोड़ देने पर दूसरी बार की उस स्थिति का काल ज्ञात हो जाता है। जैसे सूर्य के 1 राशि 10 अंश रहने पर बृहस्पति का अस्त हुआ है तो दूसरा अस्त 1/10 + (399-365) 34 पर अर्थात् 2/14 सूर्य पर होगा।

बृहस्पति के संवत्सर के मान के विषय में श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित का कथन है कि इसकी दो पद्धतियाँ रही हैं– (1) बृहस्पति का उदय जिस नक्षत्र में होता था उसी के अनुसार संवत्सर के चैत्रसंवत्सर, वैशाखसंवत्सर आदि नाम रखे जाते थे। यह उदयपद्धति है। चूँकि गुरु के उदय से दूसरे उदय तक 399 दिन लगते हैं, इसलिए 12 वर्षों (4383 दिनों) में 11 बार ही उदय होते हैं। अतः एक संवत्सर का लोप हो जाता है। (2) बृहस्पति को एक राशि भोगने में मध्यमान से जितना समय लगता है उसको प्राचीन ज्योतिषियों ने एक संवत्सर माना। इसमें संवत्सर का लोप नहीं होता। यह मध्य राशि पद्धति है। महाभारत से ज्ञात होता है कि शककाल से 500 वर्ष पूर्व, पहली उदयपद्धति ही प्रचलित थी।

क्षयं संवत्सराणां च मासानां च क्षयं तथा।
पक्षक्षयं तथा दृष्ट्वा दिवसानां च संक्षयम्॥

– शान्ति पर्व अ. 301 मोक्षधर्म

इस श्लोक में संवत्सर, मास, पक्ष और दिवस के क्षय का वर्णन है। आजकल मासक्षय प्रसिद्ध है। जिस मास में दो संक्रान्तियाँ होती हैं वह क्षयमास कहा जाता है पर प्राचीन क्षयमास इससे भिन्न था क्योंकि उस समय मेषादि राशियाँ और उनकी संक्रान्तियाँ

नहीं थीं। प्राचीन काल में 13 दिन के पक्ष को क्षयपक्ष कहा जाता था। अर्धचान्द्रमास का मध्यम मान 14 दिन 45 घटी 55 पल होता है। चूँकि मध्यम मान से पक्ष 13 दिन का नहीं होता और स्पष्ट मान से होता है। अतः स्पष्ट है कि महाभारतकाल में सूर्य चन्द्र की गतियों का सूक्ष्म ज्ञान था। आजकल तिथि का क्षय प्रसिद्ध है। वेदांगज्योतिष में दिवसक्षय का भी वर्णन है। संवत्सर का क्षय लगभग 85 वर्षों में होता है परन्तु आजकल इसमें गुरुगति का गणित राशिपद्धति से किया जाता है। चूँकि महाभारत काल में राशियाँ नहीं थीं। अतः स्पष्ट है कि उस समय यहाँ लिखी उदयपद्धति ही प्रचलित रही होगी।

मद्रास के चान्द्रमास वाले तैलङ्गी पंचांग में संवत्सर का नाम उदयपद्धति से ही रहता है गुप्तकालीन ताम्रपटों में भी इसका उल्लेख मिलता है किन्तु मारवाड़ के चण्डूपंचांग में मध्यमराशिपद्धति का प्रयोग है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार बृहस्पति को मध्यम गति से एक राशि पार करने में 361/1/36 दिवस लगते हैं। इस समय बार्हस्पत्य संवत् का मध्यम मान 361/2/4/45 सायन दिन माना जाता है। चूँकि यह काल सौर संवत्सर (365/14/48) से थोड़ा छोटा है इसलिए 85 सौर वर्षों में 86 गुरुवर्ष हो जाते हैं अर्थात् एक बार्हस्पत्य वर्ष का लोप हो जाता है। इस पद्धति में उसका आरम्भ सौरवर्ष के किसी भी दिन से हो सकता है। इससे भिन्न एक दूसरी पद्धति भी है। उसमें गुरुवर्ष सौरवर्ष के समान होता है। अतः उसमें संवत्सर का लोप नहीं होता।

प्रत्येक पंचांग के मुख पृष्ठ पर बार्हस्पत्य संवत् का नाम और उसका आरम्भकाल लिखा रहता है पर उसमें मतैक्य नहीं है। आप केवल काशी के चार पंचांग लें तो उनमें भिन्न-भिन्न चार काल मिलेंगे और दक्षिण के पंचांग को लें तो संवत्सर संख्या में 15 तक का अन्तर पड़ जायगा। इनकी संख्या 12 × 5 = 60 है। नियम यह है कि शक संख्या में 23 जोड़कर 60 का भाग दें तो प्रभवादि संवत्सरों का ज्ञान हो जायगा पर आजकल इसमें तीन का अन्तर पड़ जाता है। प्रभव के प्रारम्भ में मध्यम बृहस्पति (स्पष्ट नहीं) कुम्भ राशि में रहता है और प्रतिवर्ष एक-एक राशि आगे बढ़ता जाता है। उसके शुद्ध, अधिक और क्षय संवत्सर भी होते हैं। मार्गी गति से दो राशियों में संचार होने पर लुप्त या क्षय संवत्सर होता है।

बृहस्पतेर्मध्यमराशिभोगात् संवत्सरं सांहितिका वदन्ति।

इन साठ संवत्सरों में शुभाशुभ के निर्णय की परस्पर विरुद्ध अनेक विधियाँ हैं। उनमें से यहाँ पाँच लिखी जा रही हैं– (1) प्रथम विधि में नाम का महत्व है। आनन्द संवत् शुभ है और राक्षस अशुभ किन्तु **इस विधि से मध्यदेश में जो वर्ष शुभ है वही महाराष्ट्र में अशुभ हो जाता है। इसे मानने पर दोनों प्रान्तों की वर्तमान सीमा रेखा से अथवा नर्मदा नदी से दक्षिण जो बालक पैदा हुआ है वह संवत्सर फल के अनुसार पापी और मूर्ख होगा तथा उसी समय एक मील की दूरी पर जो बालक उत्तर में पैदा हुआ है वह धर्मात्मा और विद्वान् होगा क्योंकि समय एक रहते हुए भी संवत्सर के नामों में 14-15 का अन्तर है जबकि इन नामों का आकाश से और शुभाशुभत्व से कोई नाता नहीं है।** ◆ **(क्रमशः)**

Last male preserve falls to girl priests in Varanasi

– Sanjay Gupta

Varanasi: A batch of young girls is emerging as harbinger of a new trend in this holy city. Clad in saffron robes and donningartistic 'tikas', these girls have stormed the last male preserve in the city known for its rigid gender considerations-priesthood. And what's more, a number of people prefer them to traditional male priests.

Going against the Hindu orthodox belief that women are not supposed to learn Vedas or attain priesthood, the students of a Vedic Sanskrit Gurukul, the Panini Kanya Mahavidyalaya, perform all rituals of human life, right from birth to death.

"I have pertormed over 50 havans and yajnas at different events," said Uma Bharati Arya, a second year 'Shastri' (equivalent of graduation) student who hails from Gaya. Uma's classmate Vidya Arya from Sonbhadra, who has performed Vedic rituals in 60 houses, explained why the girls are getting considerable support. "People like our service as we explain the meaning of mantras and their effectiveness in life."

The principal of the college, Acharya Nandita Shastri Chaturvedi, said the girls are invited from faraway places like Delhi. Kolkata and Agra to perform rituals. "Our girls not only perform karmkand (rituals) but also spread the massage of gender equality and women empowerment." she said.

Chaturvedi said after finishing studies, many students have settled in different cities and are practising priesthood. ◆ **द टाइम्स ऑफ इण्डिया**, लखनऊ
दिनांक : बुधवार, 22 अप्रैल, 2015

विशिष्ट पुरस्कार

पिछले दिनों पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्नातिका वेद विदुषी **सुश्री सूर्या देवी चतुर्वेदी** जी को उत्तर प्रदेश **संस्कृत संस्थानम् लखनऊ** ने विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया है। जो कि सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिये गौरव का विषय है, सम्पूर्ण पाणिनि परिवार इस पुरस्कार से गौरवान्वित एवं हर्षित है। **– सम्पा०**

सृष्टि प्रलय संवत्सरादि काल गणना

– महात्मा ओम्मुनि

तम आसीत्तमसा गूळमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।

– ऋ. 10/129/3

सृष्टि से पूर्व प्रलय नामक महारात्रि में सत्त्व, रजस् व तमस् रूपी कारण प्रकृति गूढ अन्धकार में निमग्न थी। सृष्टि के बाद प्रलय और प्रलय के बाद सृष्टि यह चक्र अनन्त काल से चल रहा है और अनन्त काल तक इसी प्रकार चलता रहेगा। प्रलय रूपी रात्रि की समाप्ति पर परमपिता परमात्मा सृष्टि की रचना करते हैं, जिसका संकेत ऋग्वेद के तीन निम्न मन्त्रों में दिया गया है।

ऋतञ्च सत्यं... समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो...।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता...।

– ऋ. 10/190/1-3

वैदिक शास्त्रों के अनुसार सृष्टि और प्रलय को ब्रह्म के दिन और रात की संज्ञा दी गई है। अब जिज्ञासा यह उत्पन्न होती है कि ब्रह्म के ये दिन-रात कितने-2 काल के होते हैं। मनुस्मृति, अन्य शास्त्रों एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार सृष्टि व प्रलय की गणना दो प्रकार से की जाती है–

प्रथम गणना– के अनुसार 43,20,000 वर्षों की एक चतुर्युगी और 1000 चतुर्युगियों की एक सृष्टि (43,20,000 × 1,000 = 4,32, 00,00,000) अर्थात् चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों की एक सृष्टि और इतने ही काल का एक प्रलय। सृष्टि के इसी काल को ब्रह्म का एक दिन व प्रलय को रात्रि की संज्ञा दी गई है।

तृतीय गणना– के अनुसार 43,20,000 वर्षों की एक चतुर्युगी, 71 चतुर्युगियों का एक मन्वंतर और 14 मन्वंतरों की एक सृष्टि (43,20,000 × 71 = 30,67,20,000 × 14 = 4,29,40, 80,000) अर्थात् चार अरब उन्तीस करोड़ चालीस लाख अस्सी हजार वर्षों की एक सृष्टि। किन्तु इस गणना को ब्रह्म के दिन-रात की संज्ञा नहीं दी गई है।

उपरोक्त दोनों गणनाओं में (4,32,00,00, 000/4,29,40,80,000/2,59,20,000) अर्थात् दो करोड़ उनसठ लाख बीस हजार वर्षों का अन्तर है। अब यह अन्तर क्यों है और इसका रहस्य क्या है? कुछ विद्वान् इस 2,59,20,000 वर्षों के अन्तर को 14 मन्वंतरों के मध्य सन्धि काल के रूप में करते हैं। किन्तु व्यवहारिक रूप से ऐसा उचित नहीं लगता। यद्यपि मन्वंतरों के मध्य में सन्धिकाल तो है किन्तु ये सन्धिकाल अलग से नहीं हैं अपितु मन्वन्तरों की समयावधि के अन्तर्गत ही समायोजित हैं। जैसे– बारह-बारह घण्टों के दिन-रात में कुल चौबीस घण्टे होते हैं और इनके मध्य प्रातः और सायं एक-एक घण्टे के दो सन्धिकाल माने जाते हैं, किन्तु ये दो घण्टों के सन्धिकाल कुल चौबीस घण्टे से अलग नहीं हैं, इन्हीं में समायोजित हैं। इसी प्रकार मन्वंतरों के सन्धिकाल के बारे में भी समझना चाहिए।

काल गणना की दोनों विधाओं के अन्तर 2,59,20,000 वर्षों को वास्तव में दो भागों में बाँटना उचित है। प्रथम 1,29,60,000 वर्षों का काल सृष्टि के प्रारम्भ में जड़-चेतनादि की उत्पत्ति के लिए और दूसरा इतने ही वर्षों का भाग सृष्टि के अन्त में विनाश/प्रलय के लिए है। जिस प्रकार बारह घण्टों का दिन और बारह घण्टों की रात मानी जाती है, किन्तु बारह घण्टे न तो कोई सोता है और न ही बारह घण्टे कोई कार्य करता है। सरकार द्वारा भी कार्य के लिए आठ घण्टे निर्धारित हैं। बहुत से लोग रात्रि के अन्तिम प्रहर ब्राह्ममुहूर्त समझे जाने वाले समय में उठकर सन्ध्या-वन्दन, साधना, जप-तप आदि या अन्य शुभ कार्यों में लगाते हैं। परमपिता परमात्मा भी प्रलय रूपी रात्रि के अन्त के सन्धिकाल में सृष्टि रचना का ईक्षण करते हैं– 'ऋतञ्च सत्यं..........। (ऋ. 10/190/1-3) पूर्व कल्प की तरह सृष्टि की रचना करते हैं। समय का विभाजन, रात-दिन, पक्ष, मास, ऋतु व संवत्सर आदि का निर्माण करते हैं। सूर्य, पृथिवी, चान्द-सितारों एवं सभी लोक-लोकान्तरों को धारण करते हैं।

सृष्टि रचना की इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम महत्तत्त्व की उत्पत्ति, महत्तत्त्व के पश्चात् अहंकार फिर पाँच तन्मात्रा, सूक्ष्म भूत और दस इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी आदि पंच महाभूत उत्पन्न होते हैं। इन पाँचों महाभूतों के उत्पत्ति के साथ ही–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

– यजु. 13/4

हिरण्यगर्भ नामक एक विशालकाय अण्डे का निर्माण होता है। इस विशाल अण्डेरूपी गर्भ में सूर्य, पृथिवी व चान्द-सितारे आदि अन्य लोक-लोकान्तरों का निर्माण होता है। जब प्रलय काल की सन्धिवेला समाप्त हो जाती है और सृष्टिकाल की सन्धिवेला प्रारम्भ होती है, तब यह तीव्र गति से घूमता हुआ अपनी-2 कक्षाओं में स्थापित होकर अपने-2 मुख्य ग्रह/तारे की परिक्रमा करते हैं और पृथिवी का उपग्रह चन्द्रमा की परिक्रमा करता है। पृथिवी सूर्य की परिक्रमा 365.25 दिन में पूरी पूरी करती है, जिसे एक सौर वर्ष कहा जाता है और चन्द्रमा पृथिवी की परिक्रमा 29.53 दिन में पूरी करता है, इसे एक चान्द्रमास कहा जाता है और ऐसे बारह चन्द्र मासों को एक चन्द्र वर्ष कहा जाता है। चन्द्र वर्ष 354 दिनों का होता है जो सौर वर्ष से 11 दिन छोटा होता है, इसीलिए प्रत्येक तीन वर्ष के पश्चात् एक अतिरिक्त चन्द्रमास जोड़ा जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में एक मन्त्र है–

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन् साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः॥

– ऋ.1/164/48,अ.10/8/4

अर्थात् एक चक्र है जिसमें बारह अरे (बारह सौर मास) लगे हैं, तीन नाभि स्थान (तीन मुख्य ऋतुएँ-ग्रीष्म, वर्षा और सर्दी) उस चक्र में साथ ही कीलकों के भान्ति तीन सौ साठ चल और अचल-अंश/कोण/कला, चलते जाने वाले अर्पित हैं। वह कौन है जो उस एक चक्र के रहस्य को समझता है?

उत्तर है– इस चक्र का रहस्य सौर वर्ष/संवत्सर है। पृथिवी सूर्य के चारों ओर एक चक्र अण्डाकार वृत्त में लगाती है, जिसे क्रान्तिवृत्त कहा जाता है। पृथिवी ये 360 अंश की यात्रा 365.25 दिनों में पूरी करती है, जिसे वैदिक भाषा में बारह आदित्य/

बारह सौर मास कहा जाता है। यूनानी ज्योतिषाचार्यों ने इनका नाम राशियाँ रखा है। यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में बारह सौर मासों का उल्लेख है–

उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वोपयामगृहीतोऽसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोऽसि शुक्राय त्वोपयाम-गृहीतोऽसि शुचये त्वोपयामगृहीतोऽसि नभसे त्वोपयाम-गृहीतोऽसि नभस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसीषे त्वोपयाम-गृहीतोऽस्यूर्ज्जे त्वोपयामगृहीतोऽसि सहसे त्वोपयाम-गृहीतोऽसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोऽसि तपसे त्वोपयामगृहीतोऽसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोऽस्यँहसस्पतये त्वा।। (यजु. 7/30)

उपरोक्त वेद मन्त्र के अनुसार बारह सौर मासों के नाम इस प्रकार से हैं– मधु-माधव, शुक्र-शुचि, नभस्-नभस्य, इष-ऊर्ज, सहस्-सहस्य और तपस्-तपस्य। निम्न तालिका में सौरमासों से सम्बन्धित राशियाँ तथा चान्द्रमासों के नाम दर्शाये जा रहे हैं। सौरमासों और राशियों की समयावधि साथ-2 प्रारम्भ और समाप्त होती है।

क्र.स.	सौरमास	चन्द्रमास	राशियाँ
1.	मधु	चैत्र	मीन
2.	माधव	वैशाख	मेष
3.	शुक्र	ज्येष्ठ	वर्षभ्
4.	शुचि	आषाढ़	मिथुन
5.	नभस्	श्रावण	कर्क
6.	नभस्य	भाद्रपद	सिंह
7.	इष	आश्विन	कन्या
8.	ऊर्ज	कार्तिक	तुला
9.	सहस्	मार्गशीर्ष	वृश्चिक
10.	सहस्य	पौष	धनु
11.	तपस्	माघ	मकर
12.	तपस्य	फाल्गुन	कुम्भ

महाराजा विक्रमादित्य के समय में भारतीय गणितज्ञ और ज्योतिषाचार्य वराह मिहिर के यूनानी ज्योतिषाचार्यों से अच्छे सम्बन्ध थे। उस समय यूनान देश ने भी विज्ञान और खगोलविद्यादि में अच्छी प्रगति की थी। सम्भवतः उसी समय उक्त राशियों तथा ग्रहों के नाम पर आधारित ये सोम, मंगल व बुध आदि वार यूनान से आयातित किये गए थे। क्योंकि वैदिक साहित्य– वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण व महाभारतादि में इनका कहीं कोई उल्लेख नहीं है। यजुर्वेद के निम्न मन्त्र में समय की सभी इकाइयों का वर्णन है किन्तु वारों व राशियों आदि का कोई उल्लेख नहीं है–

संवत्सरोऽसि परिसत्सरोऽसीदासत्सरोऽसीद्वत्सरोसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्ताम-र्द्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताँ संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्याऽएत्यै सं चाञ्च प्र च सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाऽङ्गिरस्वद्ध्रुवः सीद।

– यजु. 27/45

इस मन्त्र के भावार्थ में उषा/प्रभात वेला, दिन-रात, शुक्ल-कृष्ण पक्ष, चैत्र-वैशाख आदि मास, वसन्त व ग्रीष्मादि ऋतुएँ एवं वर्ष आदि का वर्णन है, किन्तु वारों, राशियों और उत्तरायण-दक्षिणायन आदि का इस मन्त्र में कोई उल्लेख नहीं है। लगभग पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व इनका उपयोग भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने अपने पंचांगों में अपने स्वार्थपूर्ति के लिए करना प्रारम्भ किया और वेद-विद्याविहीन भारतीयों को

जन्मकुण्डली, राशियों व वारों के पाखण्डजाल में फँसाकर भाग्यवादी बना दिया तथा अपनी भावी संतति के लिए घर बैठे बिठाये आय का साधन निर्मित्त कर दिया।

प्रकृति के नियमानुसार दिन-रात, मास, ऋतुएँ एवं वर्ष आदि का निर्माता सूर्य है। पृथिवी अपनी धुरी पर 24 घण्टों में एक चक्र लगाती है, इसीलिए पृथिवी का जो भाग सूर्य के सामने आता है वहाँ दिन और जो भाग पीछे चला जाता है वहाँ रात होती है। इसी प्रक्रिया के अनुसार जब हमारे देश में दिन होता है तब अमरीका आदि देशों में रात होती है और जब यहाँ रात होती है तब वहाँ दिन होता है। पृथिवी के उत्तर दिशा में 66.5 के अंश पर झुकी होने के कारण ऋतुएँ और दिन-रात छोटे-बड़े बनते हैं। चन्द्रमा पृथिवी का उपग्रह है इसलिए चन्द्रमास सौरमासों के अनुवर्त्ती होते हैं अर्थात् जिस तिथि से सौरमास प्रारम्भ होंगे उसके बाद जब भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा होगी उसी दिन से सम्बन्धित चन्द्रमास प्रारम्भ होगा। किन्तु पौराणिकों के अनुसार कृष्णपक्ष की एकम् से मास प्रारम्भ होता है और पूर्णिमा के दिन समाप्त किया जाता है जोकि प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है। निम्न तालिका में ईस्वी कैलेण्डर की तारीखों के अनुसार सौरमासों व चान्द्रमासों की प्रथम तिथियों के साथ पौराणिकों द्वारा प्रारम्भ चान्द्रमासों की प्रथम तिथियाँ भी दर्शाई गई हैं–

क्र.सं.	ईस्वी तारीख	सौरमासों की प्रथम तिथि
1.	20 फरवरी 14	मधु
2.	22 मार्च 14	माधव
3.	21 अप्रैल 14	शुक्र
4.	22 मई 14	शुचि
5.	22 जून 14	नभस्
6.	23 जुलाई 14	नभस्य
7.	23 अगस्त 14	इष
8.	23 सितम्बर 14	ऊर्ज
9.	23 अक्टूबर 14	सहस्
10.	22 नवम्बर 14	सहस्य
11.	22 दिसम्बर 14	तपस्
12.	21 जनवरी 15	तपस्य

क्र.सं.	चान्द्रमासों की प्रथम तिथि	पौराणिक चान्द्रमासों की प्रथम तिथि
1.	चैत्र- 02 मार्च 14	चैत्र 31 मार्च 14 से
2.	वैशाख 31 मार्च 14	वैशाख 16 अप्रैल 14से
3.	ज्येष्ठ- 30 अप्रैल 14	ज्येष्ठ 15 मई 14 से
4.	आषाढ़ 29 मई 14	आषाढ़ 14 जून 14 से
5.	श्रावण 28 जून 14	श्रावण 13 जुलाई 14से
6.	भाद्रपद 27 जुलाई 14	भाद्रपद 11 अगस्त 14से
7.	आश्विन 26 अगस्त 14	आश्विन 09 सितम्बर14से
8.	कार्तिक 25 सितम्बर 14	कार्तिक 09 अक्टूबर14से
9.	मार्गशीर्ष 24 अक्टूबर14	मार्गशीर्ष 07 नवम्बर 14से
10.	पौष 23 नवम्बर 14	पौष 07 दिसम्बर 14 से
11.	माघ 22 दिसम्बर 14	माघ 06 जनवरी 15 से
12.	फाल्गुन 21 जनवरी 15	फाल्गुन 04 फरवरी 15से

उपरोक्त तालिका के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि सौरमास और उसके अनुवर्त्ती चान्द्रमास एवं पौराणिक पंचांगों के अनुसार चान्द्रमास कब प्रारम्भ हुए और आगे कब होंगे। वैदिक रीति से विक्रमी संवत् 2071 दिनांक 02 मार्च 2014 को प्रारम्भ हुआ था, किन्तु पौराणिकों के अनुसार यह दिनांक 31 मार्च 2014 को प्रारम्भ हुआ जोकि वास्तव में

चैत्र मास नहीं अपितु वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा थी। इस परिवर्तन के कारण शुक्ल पक्ष के लगभग सभी पर्व/त्योहार गलत मास में मनाये जाते हैं। प्रत्येक चान्द्रमास में शुक्लपक्ष प्रथम पक्ष और कृष्णपक्ष द्वितीय पक्ष होता है। मानव जीवन में बचपन और जवानी शुक्लपक्ष व प्रौढ एवं वृद्धावस्था कृष्णपक्ष कहलाता है। अमावस्या चन्द्रमा की मृत्यु के समान है। महाभारत में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद के अन्तर्गत 43वें प्रश्न में यक्ष पूछते हैं कि– बार-बार उत्पन्न कौन होता है? युधिष्ठिर का उत्तर था– चन्द्रमा'। इस उत्तर का अभिप्राय यही है कि चन्द्रमा की आयु एक मास है और अमावस्या उसकी मृत्यु के समान है। अमावस्या के बाद चन्द्रमा नवजीवन प्राप्त करता है जैसे मृत्यु के पश्चात् आत्मा नया शरीर धारण कर लेती है। इसीलिए शुक्लपक्ष के एकम् के चान्द को 'न्यू मून' कहा जाता है। जड़-चेतन प्रत्येक वस्तु में यह नियम काम करता है। शास्त्रों के अनुसार '**जायते अस्ति विपरिणमते वर्धते अपक्षीयते विनश्यति**' अर्थात् प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है, बढ़ती है, फिर बढ़ना रुक जाता और कुछ समय के बाद ह्रास प्रारम्भ हो जाता है और अन्त में प्रत्येक वस्तु मृत्यु को प्राप्त होती है अर्थात् समाप्त हो जाती है। यह शाश्वत नियम जड़-चेतन सभी में समान रूप से काम करता है। प्रकृति के नियमों एवं वेद के अनुसार वसन्त ऋतु प्रथम ऋतु है और मधुमास/चैत्र वसन्त ऋतु का प्रथम मास है। प्रत्यक्ष प्रमाणों और साक्षों के आधार पर वसन्त ऋतु आंग्लमास की 20 फरवरी को प्रारम्भ होती है पूर्व कथन के अनुसार ऋतुओं का निर्माता सूर्य है। अन्तः चन्द्रमास सौरमास के अनुवर्त्ती होते हैं और प्रत्येक सौरमास प्रारम्भ होने के पश्चात् आने वाली शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से उस सौरमास से सम्बन्धित चन्द्रमास प्रारम्भ होते हैं। जैसाकि उपर्युक्त तालिका में दर्शाया गया है। अब अगली तालिका में वेद मन्त्रों के सन्दर्भ में ऋतुओं पर आधारित सौरमासों तथा उनसे सम्बन्धित चन्द्रमास व आंग्लमासों का उल्लेख किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि किस मास का सम्बन्ध कौन-सी ऋतु से है–

ऋतु	**वैदिक/सौर मास**	**यजुर्वेद मंत्र एवं संख्या**	**चन्द्रमास**	**आंग्लमास**
वसन्त	मधु-माधव	मधुश्च-माधवश्च वासन्तिकावृतू 13/25	चैत्र-वैशाख	मार्च-अप्रैल
ग्रीष्म	शुक्र-शुचि	शुक्रश्च-शुचिश्च ग्रैष्मावृतू 14/6	ज्येष्ठ-आषाढ	मई-जून
वर्षा	नभस्-नभस्य	नभश्च-नभस्यश्च वार्षिकावृतू 14/15	श्रावण-भाद्रपद	जुला.अग.
शरद	इष-ऊर्ज	इषश्चोर्जश्च शारदावृतू 14/16	आश्वि-कार्ति.	सित.-अक्टू
हेमन्त	सहस्-सहस्य	सहश्च-सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू 14/27	मार्गशीर्ष-पौष	नव.-दिस.
शिशिर	तपस्-तपस्य	तपश्च-तपस्यश्च शैशिरावृतू 15/57	माघ-फाल्गुन	जन.फर.

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि किस ऋतु का किस-2 सौरमास, चान्द्रमास व आंग्लमास से सम्बन्ध है।

◆

(क्रमशः)

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में आयोजित ग्रीष्मकालीन शिविर का दृश्य

THE TIMES OF INDIA | VARANASI | THURSDAY, 7 MAY, 2015

Now Girls storm Male Bastion of Priesthood

Take To Performing Yajnas, Havans, Etc

Binay.Singh@timesgroup.com

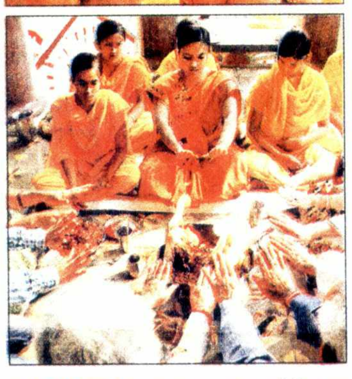

IN NEW ROLE: Female priests of the temple town Varanasi

Going against the Hindu orthodox belief that women are not supposed to learn Vedas or attain priesthood, these girls, students of a Vedic Sanskrit Gurukul -- Panini Kanya Mahavidyalaya -- perform all rituals of human life, right from birth to death. And they are getting acceptance in the society, and a number of people prefer them to traditional male priests for performing havan or other religious rituals.

"Whenever we hold any religious function at home we invite these girls to perform rituals and havan," said Harshpal Kapoor, a local businessman. Their clarity in pronunciation of mantras and humble nature creates a pious aura in

It is their devotion to the task that makes them special

the house, feels Kapoor adding that they are doing a good work to bring a change in people's mindset.

"It is their devotion to the task that makes them special. We invited them for the shanti path after the demise of my mother. It was a unique experience for us to see these girls chanting Vedic hymns fluently," said another local resident Ashok Dhawan. These girls also perform havan at Assi Ghat every morning during the function of 'Subeh-e-Banaras' initiated by the district cultural committee. Besides, they were also invited by academic institutions like Banaras Hindu University and others for 'mangalacharan' at various functions.

"So far I have performed over 50 havans and yajnas in different households," said Uma Bharati Arya, a second year 'Shastri' (BA) student who hails from Gaya (Bihar). Like Uma her classmate Vidya Arya from Sonbhadra district also undertook Vedic rituals in 50-60 houses.

"People like our service as we explain the meaning of mantras and their effectiveness in one's own life," they said adding that they found people always supporting in their work.

"Generally we send the students of Shastri to perform rituals. But, the young girls of lower classes also accompany them to assist them and gain experience," said Acharya Nandita Shastri Chaturvedi, the principal of the college, which was founded in Tulsipurpur locality by two learned sisters from Satna (Madhya Pradesh) -- late Acharya Pragya Devi and lete Acharya Medha Devi, 44 years ago.

She said that not only in Varanasi but the girls also go to other places like Delhi, Kolkata and Agra on invitation to perform rituals. "The girls perform all rituals related to birth, marriage, yagyopavit sanskar, shanti path, griha pravesh and others," she said.

"Our girls not only perform karmkand (rituals) but also spread the message of gender equality and women empowerment. Many students, who completed their studies, have settle in different places practicing priesthood," she said.

There are 90 students studying in this residential college in different classes from 'praveshika' to 'acharya' to impart knowledge in Sanskrit, Astyadhyayi, Vedas, vedic hymns, Science, Indian philosophy and karmakands. In the 13-year course the minimum age of admission is 9-11 years. Here, the day begins at 4am with recital of morning mantras. Besides learning vedas, they also learn martial arts and warfare using swords, javeline, arrows and bows.